कुरमाली लोकगीत

एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. वृंदावन महतो



BVP - 1989

19/3/18

5/13

कुरमाली लोकगीत
एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

संजुएता

डॉ. वृंदावन महतो

PYARA
FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

राँची (झारखण्ड)

मूल्य : रु. 100/-

प्रकाशक : प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, चेशायर होम रोड, बरियातु,
राँची-834009, दूरभाष : 9234301671, ई-मेल : pkfranchi@gmail.com,
वेब पता : www.kharia.in प्रथम संस्करण : जून, 2009;
लेजर टाईपसेटिंग : आम, राँची; मुद्रक : झारखंड प्रेस, 76 चर्च रोड, राँची

KURMALI LOK GEET Ek Samajshatriya Adhyyan
by Dr. Vrindavan Mahto

भूमिका

कुरमी प्राचिन काले कबिलाक नामे जानाइत रहत। एखर भासा हेलेइक कुरमाली। एखरा रनबन, बिजुबन, बाघाबन, झांटीबन, आर अरून बन लेक बाहराए कृषि जुगे आउला। चास करि जीवन-जापन करेक मूल आधार हेलेइक। तखन जे दैनिक जीवने जा सुख-दुख, रिझ-रंग कष्ट करि पुहाइत रहत सेइ छाप एखनअ कुरमाली लोक-साहिते आहेइक। आर एहे लोक साहित्य कर एक भाग लोक गीत हेलेइक। कुरमाली लोक गीते दुखःसुख साद-बिसाद कर मिश्रित रूप पाउआइक। आइज कुरमी तीन राइजे बाँटाल बादउ निजेक संस्कृति, एखनअ जस कर तस आहेइक।

कुरमी चासा हेकत कहि एखर सम्पूर्ण संस्कृति कृषि संग आधारित आहेइक। कुरमाली लोक गीत कबे लेकं एचरेइन हेलेइक कहा दाए। तबे सठिक पाउआइक जे चास बास जबे ले सुरू हेलेइक तबे लेक एकर उचरेइन हे पारेइक। मिनतुक इ गित गिलिन कने रचलाक सेटाउ कहा दाए। हे पारेइक कनअ एक लगे गित रचलाक आर गटा समाजे फेइलअलेइक। आर नि हले एक लगे एक डाँड़ि

रचलाक आर दसर गिलिने दसर डाँड़ि गिलिन रचि पुरा करल हेता।

कुरमाली अन्तर राज्यी भाषा हेकेइक। एकर साहित अगाध आहेइक। हाजार-हाजार लोक-गीत हाजार-हाजार लोक-कथा, मुहावरा लोकोक्ति भरल पड़ल आहेइक। तबे एकर सुध लेउआ लग नि हेत ला ताकरे जालाएँ बने, झाड़े, डीह, डाह डुँगरि पाहाड़ परबतेक संघाए सिसकि-सिसकि मरि हेराए जाइकला। डॉ. वृंदावन महतोक इटा एकटा छटे प्रयास जे किछु लोकगीत के जगाड़ करि संकलन करल आहे एके अशेष धन्यवाद तबे आरो-आरो जे साहित्येक विधा आहेइक ताकोउ जगाड़ संघाड़ करि सुरक्षित करा। समाजेक सभे लगे दाय। कुरमाली लोकगीत पुस्तक संकलनकर्ता डॉ. वृंदावन महतो के मर प्रानभरा आशिर्वाद।

– बसंत मेहता

लेखकीय

कुरमी समाज खेतिहर समाज हेकेइक। चास-बासेक बिना कुरमी समाज बाचे नि पारतेइक। एखर जीवन चक्र आइजअ खेती-बाड़ीञ निर्भर आहेइक। झारखंड, बंगाल, उड़िसाक कुरमीक लोक-जीवने एखर लोक-गीत माहान लोक विसास आर लोक परंपराएँ खेतिहर समाज कर सभे रंग मउजुद आहेइक। अहे माहान हजारी प्रसाद द्विवेदीञ कहले आहे "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है, बल्कि नगरों या गाँवों में फैली हुई वह समुची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं। ये लोग नगर में परिष्कृत जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं, उनको उत्पन्न करते हैं।"

सामान्यतः लोक शब्द कर अनुवाद अंग्रेजी कर 'फोक' रूप ले हेल आहेइक। ऋग्वेद माहान लोक शब्द के विराट समाज बाटे संकेत करेइक-सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्रक्षः सहस्त्रपान, ताकर माने (लोक) विराट पुरुष हेके, जाकर हजार मुंड़, हजार गड़ आहेइक। अहे माहान लोक पद कर अभिप्राय अर्थ जन समाजे हेकेइक। कविरे कहेइस 'बहे बहाए जाते थे लोकवेद के साथ।'

देसे जखन गरमा-गरम राजनीतिक परिवर्तन हेइक तखन अकर आंच नागरिक जीबने सउब ले पेहिल देखाइक। तबे गाँउए कनअ असर नि हेइक। आर एखर संस्कृति के कनअ भाभे प्रभावित नि करेइक। एहे माहान लोकगीतेक रस अक्षीण रहेइकला। लग शिक्षित हे करि अनेक रूप बदले पारत मिनतुक लोक-संस्कृति कर गति माहान बिसेस परिवर्तन नि हेइक। इ लोकगीत कर कथ्य हेलेइक-खाएक-पिएक, रिति-निति, नेग, नेगाचार परंपरा,

रूढ़ि कुरीति, रहन-सहन, चाल-ढाल, व्यक्तिगत, सामाजिक आर पारिवारिक संबंध साइस-ससुर, ननद भउजि देवर जेठानी हेन-तेन कर पारिवारिक विचार मंथन अतीत ले चलि आउअल प्रेम द्वेष, आपसी वैमनस्य बा अनुराग, नोक-झोक लुका-लुकि आझान बाझान मान-सम्मान आदि।

आसल माहान लोकगीत पुरा संस्कृति कर पाहरादार हेकेइक। लोकगीत कर शाब्दिक अर्थ हेलेइक-जन मानस कर गीत, जन-मन कर गीत, जन मानस कर आत्मा माहान रचल बसल गीत। जन कंठ माहान इ गित सुरक्षित रहेइकला आर पीढ़ी-दर-पीढ़ी बिरासत माहान पाउआइक। कुरमाली लोकगीत माहान झारखंड, उड़ीसा, बंगालेक किसान जीबनेक आत्मा कर बास अहेइक। आपन पुरखा ले पाउआल इ बिरासत के कुरमी समाजे बेजाञ जतन करि आर संभड़ाए के राखल आथिक।

लोकगीतेक परंपरा मूलतः मौखिक आहेइक। एहे कारने शास्त्रीय दृष्टि माहान शैल्पिक गठन नि हे पारलेइक। हलउ इटा सउब ले बेसि जीवंत आर हरियाली विधा हेकेइक जेटाएं हाजार-हाजार बछरलेक सुरक्षित हामर सांस्कृतिक इतिहास आहेइक। दसर रूपे कहले लोकगीत मानुस कर सनातन संघर्ष आर अकर अशेष जीबनेक काव्यात्मक दास्तावेज हेकेइक।

प्रस्तुत पुस्तक कुरमी समाजेक विराट लोकगीत परंपरा कर एकटा परिचय मात्र हेकेइक। आशा आहेइक इटाएँ कुरमी समाजेक लोक-साहित्य पढ़ुआ आर अध्ययन करा के मदद पाउआतेइक आर अखरा कुरमाली लोकगीत कर विराट दुनिया माहान आसानी माहान प्रवेश करे पारता। आर आत्मसात करे पारता।

– डॉ. वृंदावन महतो

विषयक्रम

कुरमाली लोक गीत

परिचय

झारखण्डेक आदिम बसकइताक भितरे 'कुरमी अ' आदिम निबासी। 'कुरमीक' आदिम नाम कुड़मी। जेसन झारखण्डेक प्राचीन नाम झाड़खण्ड। कुरमिञ बा कुड़मी जाइते आपन भाव-बिचार बिनिमय कर जे साधन टा आपनाला अहे साधन कर नाम हेलेइक 'कुरमाली भासा'। आर 'दुखे-सुखे' रहि जे काथा गिला लयात्मक भाभे बा ज्ञेय हेलेइक से गिलाइन कुरमाली लोग गीत कहाइक।

बर्तमाने कुरमिक बसोबास बेसी भागे झारखण्ड, बंगाल, आर उड़िसाएँ आहेइक। एसे तो आघु बिहार, बंगाल, उड़िसा एके राइज रहेइक मिनतुक तिनों राइज जखन भिनु-भिनु हेलेइक तखन तिन राइजे बाँटाला। आइज बंगाले बाँगला भासाएँ प्रभावित आहात, उड़िसाएँ उड़िया भासाएँ किन्तु नेगाचार, लोक-गीत, लोक संस्कृति, सभे कर समान आहेइक।

कुरमी 'बरबर' अवसथाएँ पांच बने आन लगेक संगे रहतं जेसन खेज कर हिंसाबे पाउआइक-1. रन-बन 2. बिजु बन 3. बाधा बन 4. अरून बन 5. झाँटी बन। इ बन ले कुरमी आन जनजाति ले पेहिल बाहराए आउला 'पसु पालन' अवस्था ले कृषि अबस्था माहान प्रवेश करला। कुरमी गरू-काड़ाक संगे सुतत आर चास बहुत रितिमत बढ़ियाँ करे पारत। चासेक गरू काड़ा के निजेक छउआ रकम जतन करथिन। आर पासा-पासि राखथिन।

कुरमिञ निजेक 'हार' - 'जुआँट' निजेइ छिंड़त हिंआ तक कि चास करले जतना सामान कर दरकार हेइक सभे कुरमिञ निजेइ बनात। 'फार' टि आर पासि टि कामारे बनाए देथिन अहे माहान कांहु-कांहु एखर नाम कामार घार ना हेके राजा घार हेइक। कारन बिना फारे चासेक आस निहिं। कुरमिञ आन जाइत कउ निजेक घारे राखि चास सिखालेथिन। अहे माहान कुरमी के 'चासा' 'किसान' नामउ जानथिन।

कुरमिक एहे चास बास दिनचर्या हेलेइक आर मूल आधार खेती

हेलेइक तेकरे माहान इ लग गिलाइन कर जमीन सउब ले बेसी कमजोरी। बिना जमीने खेती संभव नेखेइक अहे माहान जमीनेक उपर खुब लोभ। आर कखनअ, कखनअ आइजअ एक इंचि जमीनेक जालाँक माइर–काइट करत। हिआं तक कि केस मुकदमा लड़ि जिबन सिराए देथिक।

एहे दुखे: सुखे: रहि जे आदि युग ले कुरमी लगे आपन भाव गितेक माध्यमे प्रकास करत आर पीढ़ी दर पीढ़ी चलले आउउलेइक, अहे टाइ साधारन भाभे 'लोक गित' कहत। जेटाए परिस्थिति अनुसार काल परिवेश आर जीवन–यापन कर आधार रहेइकला। विभिन्न बिंदुआने विभिन्न भाभे लोक–गित कर परिभासा देल आथिक। कने–कने 'लोक–गित' के किना किना कहल आथिक ताकर निमुद हेठे दोआइकला।

परिभासा

"सुख: दुख कर भावावेशमयी अवस्थाक विशेष करि गनल गुँथल शब्द माहान स्वर साधनाक उचित चित्रण करि देना गित हेकेइक।"

–महादेवी वर्मा

"लोक–गीत त आपने जनमेइक।" –ग्रीम

"आदि मानुसेक उल्लासमय संगीत केइ लोक–गीत कहथिक।"

–पल्लि

"लोक–गीत ना त नाउआ हेइक ना पुरना। इ त संसार कर एकटा गाछेक समान हेकेइक जाकर जेइर भूतकाल कर जमिने बेजाञ हेठें ढँसल आहेइक, मिनतुक जेटाएँ सभे खन नाउआ नाउआ डाइर, पात आर फर धरेइक।" –भी. वीलियम

"लोक गीत कर बल जातीय संगीत माहान आहेइक।"

देवेन्द्र सत्यार्थी

"लोक गीत कनअ संस्कृति कर मुँह बोली संगी हेकेइक।" –

वासुदेव शरण अग्रवाल

" आदिम मानुसेक हृदय कर गेआनेक नाम लोक गीत हेकेइक। जेटाएँ मानुसेक उल्लास, उमंग, करूणा आर सुख–दुख कर केहनि चित्रित आहेइक।" – सूर्यकरण पारीक

"ग्राम गीत प्रकृति कर उदगार हेकेइक। इटाएँ अलंकार निहि केवल रस आहेइक। छन्द निहिं केबल लय आहेइक, लालित्य निहिं केबल माधुर्य आहेइक। सभे बेटा छउआ बेटि छउआक माझे हृदय नामेक आसअने बसि प्रकृति मान करेइ आर एहे प्रकृति यान गिलाइ ग्राम-गीत हेलेइक।"

–रामनरेश त्रिपाठी

" लोक गीत आर्येत्तर सभ्यताक वेद हेकेइक।"

" लोकगीते संगीत आर काव्य मेसा साना आहेइक।"

–कोमल कोठारी

" लोक गीत हामर जीवन विकास कर इतिहास हेकेइक।"

–डॉ. तेज नारायण लाल

" लोक गीत स्वतः स्फुरण कर देन हेकेइक।"

–बद्री प्रसाद पंचोली

" लोक गीत रसे सानाल आहेइक।" –मोहन कृष्ण दर

कुरमाली लोक-गीत

कुरमाली लोक गीत–कुरमी लगेग जिबनेक आधार हेकेइक। दिन–राइत खेते, गठे, पाहाड़े पर्वते मरअ–कटह काम करि फेदात तखन, फेदान मेटाएक जालाएँ आर गाते बल घुराए आनेक जालाँए लोक–गीत गाउअत। जेसे सिराल बल घुरि आउएइक आर दसर दिन काम करेक खातिर नाउआ जस पाउआइक, उमंग आर उत्साह रहेइकला। जदि इ उमंग आर उत्साह गाते ना घुरि आउएइक तबे लगे दसर दिन काम नि करे पारता। काम नि करले रजे खाटि खाउआ लगेक बांचेक कष्टअ आहेइक। एहे सउब करनेइ लोक–गीत लोक–संस्कृति जीवनेक आधार हेलेइक।

शारीरिक जतना कसटअ हेलउ थकत निहिं। अहे माहान लोक–गीत लोक जीवनेक आधार कहल जाइक। लोक–गित कनअ एक लगेक रचना ना लागेइक मिनतुक लोक–गीत केउ एक डाँड़ि गाउलाक त दसर लगे आपन बुइध गेआनेक आधारे दसर डांड़ि गाए पूरा करए तेसने आर एक लगे तिसर डांड़ि। एसने भाभ लोक–गीत बनलेइक आर गटा समाजेक लगे धरि राखला। कनअ कनअ लोक–गीत हए त केउ एकाइ रचले हेताक मिनतुक

उटा गटा समाजे आपनाला। एहे भाभ लोक-गितेक जनम हेलेइक। लोक-गीत, दुख-सुख, हर्ष-बिसाद कर मेसा-साना अभिव्यक्ति हेकेइक। कुरमाली लोक-गीत कुरमिक मंतरअ हेकेइक। एखर पुजा-पासाएँ कनअ मंत्र उच्चारण नि हेइक। एहे लोक-गीत गिलिने देव-देवी पास मंत्र कर रूपे आहेइक।

कुरमाली लोकगीतेक लक्षण

कुरमाली लोकगीतेक कनअ् बिसेस गितकार नि हेत। आघुक जुगे गाँवेक अनपढ़ जन समुदायेक माझे मौखिक प्रचालित गित गिलिन के कनअ सभ्य साहिते परिभाषित नि करेइत रथिक। इ गिलाइन कर कनअ दाम नि रहेइक। मिनतुक औद्योगिकरन कर कारने युरोपिय देसेक मौखिक गित, केहनि सिराय लागलेइक, तखन इ गित, केहनि गिलाइनकर संकलन सुरु हेलेइक। आर सुशिक्षित समाज कर पासे राखल गेलेइक जेटाएं बजाञ एसन तथ्य समाहित आहेइक जेटाएँ बेजाञ एसन तथ्य समाहित आहेइक जेटाएँ सौंदर्य और मार्मिकता लिखित प्रकाशित रचनाएँअ नि पाउआइक। आर तखन ले लोक-साहित्य आर सिस्ट साहित दुइ भाग हेलेइक। एहे लोक-साहित कर एक भाग 'लोकगित' हेलेइक।

'लोक गित' कर मुख्य लक्षण-मौखिक, परम्परागत, बेनाम आर समुदायेक माझे चलन। गितकर माने हेलेइक गितकाए कर रचना। मिनतुक लिखित भाभे निहिं मौखिक रूपे। लोकगित हाजार-हाजार कंठे बास करेइक आर एक लग ले दसर लग ताहाँ जाइक एक पिढ़ी ले दसर पिढ़ीक लगे ग्रहण करत। एहे कारने लोकगीते बेजांइ मसकिल जे कन रचना आघुक आर कन रचना एखनुक।

लोक गितेक रचनाकार कर अभाव रहेइकला। लोक-गीत जुग-जुगले प्रचलित आहेइक आर एक पिढ़िञ दसर पिढ़ि के प्रदत्त करेइक अहे माहान केउएनि कहे पारत जे कने इ गित गिलिनेक रचना करलाक। तबे तखन कर जुगे केउए त उचरालक। एक लगे एक सबद बा डांड़ि उचराए आर उठिनेक दसर लगे आपन दिमागेक आधारे आघु बाटे जड़ले जात एकर परे गटा सामाजे उटा के गाए लागलेथिक। एसने भाम लोकगीत व्यक्ति विसेस कर ना हे करि समाज विसेस कर हेइक।

लोक गितकर रचना कालेक पाता नि चलेइक। आर आघु बाटे पद जड़ाले जाइक। अहे माहान एकर आसल रूप टा जे जखन ले सुरू हेलेइक तखन ले अहे टाइ आहेइक कहना कठिन हेकेइक।

लोकगीत कर मौखिक चलन बेसी अहेइक। 'बेद' क़रअ एहे चलन रहेइक। जदि 'बेद' माहान लिखित पढ़ल जाइतेक त स्वर भंग हेइतेलत आर 'अर्थ' भिनु बाहराइतेलेइक। एहे माहान वेद के श्रुति कहल गेलेइक। जेटा काने सुनालेइक अहे टाइ उच्चारण हेलेइक। लोक-गीत आर 'बेद' माहान सउब ले बड़े समानता एहे टाइ हेलेइक। 'वेदो' लिखित नि आउलेइक आर लोकगितो निहिं।

लोक गीत कर शैली सहज हेइक। सभे लोकगित 'गाएक' रकम रहेइकला। कविताउ गाउअल जाइक मिनतुक लोकगित आर कविताएँ तफाद आहेइक। कविता एक लगेइ गाए पारए समुह माहान गाउआ नि जाइक। मिनतुक लोक-गित एक लगे गाउले सभेए धरे पारत।

लोक गित कर रचना अति भावावेसे हेइक। अहे माहान जेटा मुँह ले अनायास स्वर लहरी फुटि बाहराइक। जे गाउलाक अहे गित बनलेइक।

लोकगित कर टेक डाँड़ि गिला घुरि फेरि आउएइक। जेटा पुनरावृत्ति कहा जाइक। कए एकटा डाँड़ि गाउअल बादे टेक डाँड़ि गिला दहराए घुरे हेइक। इगिला बेसि रहलउ कनअ कनअ लोकगिते नेखेइक।

लोकगिते आसे पासेक जाना चिन्हाप जिनिस कर प्रयोग हेइक। समाजे जे जिनिस गिलिनके लगे चिनथिन जानथिन अहे जिनिसेक लोकगिते प्रयोग हेत।

कुरमाली लोक-गितेक वर्गीकरनेक आधार

कुरमाली लोक साहितेक भितरे लोक-गित कर बेजाञ महत आहेइक। एसनउ गित लगेक एकटा अनिवार्य जिनिस हेकेइक। आर इटा आदि काल ले चलले आउएइकला। जिवनेक सभे अबसरे गित कर धेइ लेइके पुरा करत। लोक-गित मासेक आर संस्कार कर आधारे गाउअल जाइक। कांहू-कांहू विशेष जाइतेक ले केउ गित गाउअल जाइक।

लोक गितेक मूल कारन मनोवैज्ञानिक आहेइक। नाना रकम मरअ-कटअ

काम करि फेदात फेदान धुर करेक, बा कामेक कठिनता आर निरसता के थड़ेक आधेक कम करेक जालाएँ गित गाउअत। एहे निआर डॉ. कृष्णदेव शर्माए लोक गितेक वर्गीकरणेक पांच आधार देलथिक-(क) संस्कार कर दृष्टि माहान (ख) रसानुभूति प्रणाली (ग) ऋतु बा व्रत कर क्रमे (घ) नाना जातिक अनुसार (ङ) श्रम कर आधारे।

एसने भाभ नागपुरी लोकगितेक वर्गीकरण डॉ. भुवनेश्वर अनुजेक आधारे-(1) संस्कार संबंधी (पुत्र जन्म, विवाह, गवना, लियावन आदि) (2) ऋतु संबंधी गीत (बारहमासा, होली आदि) (3) ब्रत संबंधी गीत (धरती पूजा, सरहुल, करमा, जितिया, तुलसी पूजा, जन्माष्टमी, देउठान, दुर्गा पूजा, दीपावली आदि) (4) क्रिया संबंधी गीत-(रोपनी, कृषि के अन्य कार्य तथा अन्य उद्योग) (5) विविध गीत-(झूमर, निर्गुण, भजन, गुदना गुदवाते समय, उदासी)

मिनतुक आघु बाटे अनुज जींञ कहेइस जे नागपुरी क्षेत्रेक जन समाजे सभे संस्कार प्रचलित नेखेइक तबे रूप देखाइक।

डॉ. संतोष कुमारी जैने-कुरमाली लोक गितेक वर्गीकरण कर कएएकटा आधार देल आथिक-एखर कहना जे साहितकारे लिंग भेद कर आधारे भाग करल आहात। बेटा छउआक आलेदा लोक गित आर बेटि छउआक आलेदा। दसर ऋतु बा मासेक आधारउ एकर वर्गीकरण करल जाए पारेइक। 'भादर मासे' गाउअत से गित गिलिन 'भादरिआ'। चेइत मासे गाउअत से गिलिन के चैता, फागुआ, हेन-तेन।

संस्कार कर गित जेटा पुजा, अनुष्ठान बा धार्मिक गित रहेइकला। थड़ेक गित उद्योग ले करि केउ आहेइक आर किछु कृषि ले आधारित आहेइक।

लोक-गितेक आर एकटा आधार शैली आर नृत्य-गित, हेइक बा ना हेक वर्गीकरण कर आधार मानल आथिक।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याये लोक गित के निम्न भागे बाँटल आथिक-(क) संस्कार संबंधी गित-इटा माहान राखल आहान-1. सोहर कर गीत, 2. मुण्डन कर गित, 3. यज्ञोपवीत गित, 4. विवाह कर गित, 5. गवना कर गित, आर 6. मृत्यु गित।

(ख) ऋतु-संबंधी गित-इटाक भितरे जे गित गिलिन राखतला उ

गिलिन हेलेइक 1. कजली, सावन भादो, शुक्ल पक्ष तीज, 2. होली, 3. चैता, 4. बारह मासा।

(ग) व्रत संबंधी गित-ब्रत संबंधी गिते जे गित गिलिन राखल आहात उ गिलिन हेलेक 1. नागपंचमी गित, 2. बहुरा, 3. गोधन, 4. पिंड़िया, 5. छठी माताक गित।

(घ) जाति संबंधी गित-इटाएं गित आहेइक 1. अहिरकर गित, 2. दु:साध कर गित, 3. गोंड़ कर गित, 4. तेली कर गित।

(ङ) श्रम-गित-जेटाएं 1. जॉत कर गित, 2. रोपनी कर गित, 3. सोहनी कर गित।

(च) देवी देवता कर गित-इटा माहान नाना रकम कर देवी देवताक गित राखल आहान जेसन शीतला माता, गंगा माता, तुलसी माता, गणपति, हनुमान कर गित राखल आहात।

(छ) विविध गीत-इटाक भितरे झुमर गित, अलचारी गित, पुरवी निर्गुन आदि गित राखल आहात। कनअ कनअ समए विविध गित श्रृंगार रसे भरल रहेइकला।

कुरमाली लोक-गितेक वर्गीकरण

पेछुक पाठे जाना गेलेइक जे लोक गित कर वर्गीकरण कर आधार किना किना आहेइक। दसर-दसर भासाक लोक-गितेक निआरे कुरमाली लोक गितेक वर्गीकरण मटा-मटि आहेइक। एकर बेसि भाग मोखिक भाभे प्रचलित आहेइक।

डॉ. एच. एन. सिंहेक आधारे कुरमाली लोकगीत के निम्न वर्ग माहान बांटल आथिक-डोमकच, सोहराई गित, टुसू गित, करम गित, रोपनी गित, नटुआ उधवा (यात्रा गित) ढप गित, डाहा गित, सरहुल, पैरी आदि।

डॉ. संतोष जैने कुरमाली लोक-गित के निम्न वर्ग बांटल आथिक-(1) विवाह गित, (2) व्रत-त्योहार गित, (3) ऋतु गित एवं श्रम गित, (5) नृत्य गित एवं नाट्य गित तथा (5) प्रकीर्ण गित।

मर आधारे कुरमाली लोक-गितेक वर्गीकरण एहे निआर हे पारेइक-

(1) संस्कार गित (बिहा-गित, मरखि-गित)

(2) व्रत-त्योहार गित (जाउआ, करम, जितुआ, वांदना (संहराई) टुसू आदि)

(3) ॠतु गित (बारह मासिआ, भादरिआ, आसाड़िया, आदि)

(4) श्रम गित (रोपा-गित आदि)

(5) जातरा गित (उधवा गित आदि)

(6) विविध गित (ढप, एढ़ेइआ, छउआ खेला गित, छउआ भुला आदि)

(1) संस्कार गित

(क) बिहा-गित-

झारखंड बंगाल आर उड़िसाक कुरमी देसेक आन कुर्मी लेक आलादा हेकत। अहे माहान एखर भासा आर संस्कारअ आलादा आहेइक। कुरमिक हाँड़ि बिहा हेइक मिनतुक एखन बामन आनि कउ विहाक नेग सारत। कुरमीक एकासि टा गत्र आहेइक। एक गुसटिञ (गत्रे) बिहा नि हेइक। जदि डुमरिआर (गुसटि) गत्रेक लग हेके त डुमरिआर घारे नि हेइक एकर बिहा कनअ बन-सिआर, बंसरिआर, कुड़अआर आदि घारेइ बिहा हेतेइक। कनअ कनअ समइए एक गत्रउ बिहा हेइक त अखर एक रिचिक बे पुजा-पाठ भिनु हेइआ दरकार।

कुरमी घारे 'पन टाकाक' चलन आहेइक जेटा बरेक बापे कनेआक बाप के देतेइक। 'दहेज' नाम कर रोग नेखेइक मिनतुक एखन दसर समाजेक देखा-देखी लगे कांहु-कांहु लुकाए-छुपाए चालाएक कोसिस करतला जेटा दसर कुर्मीक आघु लेक चलन आहेइक।

कुरमी घारे 'बर' ढुड़ेक प्रचलन नेखेइक। 'कनेआ' ढुढ़ेक प्रथा आहेइक। कुरमी घारे बिहा माघ मास ले आसाड़ मास तक हेइक। खेती-बारीक दिन आउले मिनतुक बिहार सादि हका हेइक। कुरमी घारे कनेआ बा बर देखा हेइक। आर सुता छिटलेइ सर सगुने बिहा साराइक जेटा सलह सगुने बिहाउ कहत। सलह टाक माने हेलेइक सुरु-खुरु, कनअ 'बिघनअ-बाधा' निहि। 'सलह-आनाए' एक टाका। सलह सिंगार माने सिंगारे कनअ टाक अभाभ निहि। तेसने लग के पुछथिन जे दुइअ घारेक लग एखन केसन आहात? तखन कहथिन 'सलह आनाइ' आहात। ताकर माने बेस के हिआ खालासे रहल, काम पार हेल टाइ 'सलह आना'। तेसने बर-कनेआ दुइअ घारेक बिहा सुरु-खुरू हेल टाइ सलह 'सगुने' बिहा कहत। आर कुरमी कर मुख्य सलह टा 'सगुनअ' आहेइक। 'नेगअ' आहेइक। सभे नेगेक लोक-गित आहेइक।

बिहा-गिते केनिआ बाटेक गित आर बर बाटेक गिते तफाद आहेइक। बर बाटेक गिते हाँसि-खुसिक आर उल्लास कर गित आहेइक त कनेआ बाटेक गिते हाँसि-खुसि आर आनन्द कर संगे करून रसेक मर्म-स्पर्शी

बिदाइ गित आहेइक। गित सुनले आंइखेक बाँधल बाँध फुटेइक। जे नेग गिला कुरमी घारे हेइक से गिलिन मटा मटा हेठे देल जाइकला।

1. बरतु (पान चन्दन) -

कुरमी घारे 'बरतु करा' एकटा नेग आहेइक जेटा बरेक आर कनेआ कर बिहा हेक निश्चित हेइक। आर दुइअ बाटेक लग बिहा कर जगाड़ पातिञ लागि जात। 'बरतु करा' लग बर घार लेक कनेआ घार आउअत आर कनेआक जालाँए 'बरतुक साड़ि गहना' आनि कनेआ के पिंधाथिक। पिंध ाएक बेराएं आनागाएँ 'चउक' पुरत आर कनेआ घारेक लगे कनेआ बाहराथिक। संगे संगे अखर कुटुम, भइआद आर पासा पासिक लग जडअ हेल रहतला। 'बरतु करा' नेग टाके कांहु-कांहु पान चंदनअ कहत।

गीत- "जुहा खेले गेले बाबा, पासा खेले गेले ह,
काहे बाबा मके हारअले
गाइ बल भञसि बाबा
काहे नि हारअले।
गाइ बल भञसि बेटि
घारे के लछमि ह
तहें बेटि पराधिन ग।"

2. लगन बाँधा -

लगन बाँधा, बा लगन धरा एके जिनिस। इटाउ कनेआ घार बाटेइ हेइक। बर घार बाटेक (बिजड़) तिन लग बा पाँच लग कनेआ घार आउअत। लगन आघु गारह दिन, न दिन, सात दिन, पांच दिन, तिन दिन हेइत रहेइक मिनतुक जबे लेक एक पानिआ बिहा हे लागलेइक तबे लेक रका लगन बाँधे लागला।

जए दिनेक लगन हेइक तए टि हेरेइद कनेआएं बेस 'सने' बाँधि ध राए देथिन। बर घारेक लगे लुगाँए पट करि ले आनत आर उटा भुञे कांहु नि राखत। घार आए के बर के धराए देथिक। बरे रज एकटा हेरेइदेक गेंइठ गुचाए आर तेल हेरेइद बरेक बेहिने माखाथिक सेंसेंक हेरेइदे जानि पाउअए जे आइज बिहा करे जाए हेतेइक। ताकर माने बिहाक दिन टा जेसे ना भुलि

ह गनति टाउ जेसे बेस रहउक कहि नेग हे हेलेइक तेसने बुझाइंक। कारन आघुक लगे गनति नि जाने हेला ताकरे जालाँए इ सउब बेबसथा रहेइक आर एखनअ आहेइक। लगन धरा बाद लेक बरे 'गुआ काटा' आर कनेआएं 'कजलउठि' संगे राखथिन। आर एका-दुका घार ले नि बाहरात। जबे तक बिहा ना हेइक।

गीत 1. "चारि कनाए पखराहिं फुटअल सालुकेक फुल
कनअ फुले लगन धराए
कनअ फुले हउअत बिहा
कनअ फुले हउअत बिदाइ
चारि कनाए पखराहिं फुटअल सालुकेक फुल
सालुक फुले लगन धराए
आंकद फुले हउअत बिहा
पारास फुले हउअत बिदाइ।"

2. बड़अ रे टाइड़े बाबा
बड़अ रे सिमइला गाछ
फुटि गेला आलइ-मालइ फुल
बापे ना तड़के पारे
माए ना तड़के पारे
तड़ि लेला गअ दसर गांउएग लग
कनअ फुले लगन बाबा
कन फुले बिहा गअ
कनअ फुले हए त बिदाइ
गुंलचि फुले लगन बाबा
आंकद फुले बिहा गअ
पारास फुले हए त बिदाइ।"

(3) माड़उआ बाँधा नेग-

इ नेग टा 'बर घारे' आर 'कनेआ घारे' दुइअ बाटे हेइक। घारेक माझ आनगाँए आपन-आपन 'भइआदे' सारेइ काठेक, खुंटा, डहुरा, पात, पालहा, आनि, छामड़ा घरत ताकर माझे 'माड़उआ' चाइर टा नान, सरू सारेइ

डाइरे बनात ताकर माझे माटि लेसि उचँअ करत। चाइरअ कनाए चाइर ट 'सिरिबारि' दिआ जराथिन। छामड़ा माड़उआ घरल बादे 'पुंड़ खुखड़ि' नेग हेइक जेटाएं खुखड़ि पुजा करथिन जेसे कनअ रकमेक 'फांड़ा' ना रहउक।

माड़उआ बाँधा गित-

(क) काकर बाँधल हेकेइक रे बाबा झिलिमिलि माड़उआ
काकर पसल हेकेइत रे बाबा हांका जड़ी पेरउआ
जेठाक बाँधल हेकेइत रे बाबा झिलिमिलि माड़उआ
जेठिक पसल हेकेइक रे बाबा हांका जड़ी पेरउआ।''
टलमल करए रे बाबा झिलिमिलि माड़उआ
घुरि-घुरि कुँड़रए रे बाबा हांका जड़ि पेरूआ

(ख) कने तरअ बाँधए झिलिमिलि माड़उआ
कने तरह लिखए राम सुंदर कहबर
दादाएं तरअ बाँधए झिलिमिलि माड़उआ
भउजिञ तरह लिखए राम सुंदर कहबर।''

(4) हेरेइद माखा नेग-

लगन बाँधा दिन लेके बर कनेआक हेरेइद माखा नेग हेइक। कुरमी समाजे हेरेइद टाके अपसगुन निवारक कहल जाइक। हेरेइद माखले गातेक एकटा आभा आउएइक। हेरेइद तेल माखा कुरमी समाजे संसकारिक हेकेइक। जनम, बिहा, आर मरन तक तेल हेरेइद माखा नेग आहेइक। बरेक बेहिने बर के आर कनेआक बेहिने कनेआ के तेल माखाथिन।

हेरेइद माखा गित-
बाबा मर बहिन, सनाक थाराएं हरदि माखे
हरदि बरनअ उठे रे
बाबा बर बाबु खाला दनाए हरदि माखे
केरिआ बरनअ उठे रे।

(5) बड़ि पारा -

बड़ि पारा नेग दुइअ घारे हेइक। बर बाटउ बड़ि पारत आर कनेआ बाटउ बड़ि पारत। नाउआ बांसेक छाताएँ नि हले नाउआ दउराएँ बड़ि पारत। बड़ि उरिद दाइलेक बनेक। बरेक आर कनेआक बहअ (भउजि) नाता गिलिने बड़ि पारत। बड़ि पारल बादे छाइने सुखे देथिक।

बड़ि पारा-गित

सबरनाखाक लड़हि-पाटि
मइधे ह हलदि
पिसइते पिसइते भउजि मुरझाए
अति सुकुमारि जे धनि पालखें चढ़ि खाए
बाबा के तरअ मागअ ह धनि
गटा चारि कामिनि
राति-दिनि पालंख डलाए
बाबा मरअ हेके ह परभु
जनमेका कांगाल
काहां पाए देता ह परभु
गटा चारि कामिनि।

(6) अम्ल खाउआ-

अम्ल बर कनेआ दुइअ बाटे खाउआ हेइक। अम्ल खाउआ टा कुरमिक आसल नेग कहा जाए पारेइक। आम डाइरे बर घारेक बेटिछउआएं खात आर महुआ डाइरे कनेआ घारेक बेटिछउआएं खात। इटा आम बिहा आर महुल बिहाउ कहत। अम्ल खाएक जालाँए माए, मसी, काकी, जेठि बिहान लेक उपास रहतला। बरे आम डाइर चाबि रस टाके गुडे थुकेइग आर कनेआएँ महुआ डाइर चाबि थुकएँ माए, मसि, काकी जेठिञ खात आर एहे खाएक टा अम्ल खाउआ नेग कहाइक। माँए, मसिञ गाछ फेड़े कराएं बसाए के आपन देल पेआर, आदर, स्नेह आपस लेथिक आर एक नाउआ संसारिक पेआर, आदर, स्नेह आत्मा आर परमात्माक मिलने पाठाथिक। अहे

माहान बर बा कनेआ अम्ल खाल बादे बिना बिहा करि घार नि ढुकत आर समाजे ढुकउ नि देथिन। बरे आम बिहा अहे जालाएँ करए, कारन आम फरेक राजा। आम 'कुहु' (आंठि) जतना चुसेक अतना मिठास आउइएक अहे माहान बरे कनेआक परिकल्पना गुठलि संग करए। असने महुआक रसे लग मातु हेत। कनेआक परिकल्पना जे मर गातेक 'लावन' महुआ रस निआर टसाल रहउक आर मर बर सारा जिवन मर संग मातु हेल रहअका। आन बाटे नजर ना करअ।

अम्ल खाउआ गित–

कनअ कनाए आहे बाबा आम रे जाम ह
कनअ कनाए आहे महुल डाइर
पुरूब कनाए आहे बाबा आम रे जाम ह
पछिम कनाए आहे महुल डाइर
केसे के चिनहबे बाबा आम रे जाम ह
केसे के चिनहबे महुल डाइर
मनअहिते चिनहबं बाबा आम रे जाम ह
खंचहिते चिनहबँ महुल डाइर
कने जे खाए बाबा आम रे जाम ह
कने जे खाए महुल डाइर
बरेक माएं खाए बाबा आम रे जाम ह
कएनाक माएं खाए महुल डाइर

डमकच –

बर संग जखन गाउएक सभे पुरूस बारात चलि जात तखन बेटि छउनाक चरि–हेरिक डर रहेइनला। बिहा मानेइ घारे सारे भरल पुरल जिनिसेक जगाड़ रहेइकला। ताकरे जालाएँ बेटि छउअनाएं राइत जागा करत आर गित गाए, नाचि डेगि बिहान करत–

गित–1. "टुंगरिका धारे धारे छागारि चारालिह
आमअ का झंपा देखि लेबदा चालालिह।"

2. बाड़िक बाइगन के तुले छ काना ल
बाड़िक बाइगन के तुले छ काना,
आमार पुरूस एकला आछे
कतइ जाबेक थाना ल, बाड़िक बाइगन...

3. खार काचे गेलि, पाखअना दलअके ह
ठाड़े रहबे सिपहिंआ पखइर दलअके ह।

4. साग तड़े जाए रहि, कइरि का बाड़ि ह
खंइछा भेला भारि न छिटि गेला साड़ि।

5. बांसे का बांदा तरे के सिटि मारे ह
हेरेद रागंल धतिआ देउअरा सिटि मारे ह।

(7) बरेक सआगत-

अम्ल खाल बादे बर आर घार नि घुरए। बर-बरिआत, गाजा-बाजा पालकि, गरू गाड़ी सउब लेके कनेआ घार के जात। गाँउ मुड़ाए बर के बेटि छउआएँ छेकथिक (बेसि भागे कनेआक बेहिन नाता गिलिने) आर बिहा गिते भांड़ि-सुटि उसट-पासट गाइर देके सआगत करथिक। कुरमी समाजे लोक-गित गिलाइ मंत्र जेटाएँ अपसगुन काटाइक। अहे माहान बर के गाइर देले अकर फाँड़ा काटाइक। ताकरे जालाएँ कतनअ खाराब गाइर देलउ रागे नि हेत। एसने फाँड़ा काटाएक जालाएँ केनेआ करअ गाइरे सआगतं हेइक।

गित (क)-घुराएं रे तर ढाक ढल
घुराएं रे तर बुढ़ा बर
एसन सुंदर बिजली कनेआ नाइ रे
दिबऊ बुढ़ा बर

ख) गाँउ मुड़ाए नाच लागे
गाँउएक लग देखउआ
बरेक बेहिन नेचनि सालि
बरेक भाइ हेके नाचाइआ

(8) दुआइर लागा गित-

गाँउ मुड़ा लेक जखन 'बर' घार तक पहंचए तखन दुउआइरे गुआ टिका हेइक। कनेआक बापे, काकाएं गुआ टिका देथिक। गुआ टि एकटि चुकाएं चुनि, चंदन, पानिञ भिंजाए के बरेक कापाड़े तिन धाँउ छुआथिक।

गित क) बर बरिआत दुआइर लागे
टला गाँउऐक लग जागे
चलल बर परिछने सभे गुआ चंदने
परछि आनि बर के बइसाअग मंडपे
गजअ मति चउक पुरि गित गाउए
बरेक बाप काकाक संगे सभे
बरिआत बसे ग मंडपे

ख) आउअल सुंदरअ बर
बसलअ पिपर तरे
पिपरअ बिनि बिछि खाए
आगे कहबे बर माए केरा नाम ह
तबे बरअ लागअबे दुआइर

(9) पितर-पिंधा -

पितर पिंधा नेगे बर घार लेक सार-भारेक संगे माँए मसि, काकी, जेठिक, साड़ि आर कनेआक तिन रकम कर साड़िक संगे गहना आउएइक। बरेक घारेक साड़िए कनेआक संगे माँए, मसि, काकी, जेठिञ पिंधत। 'कनेआ' के छामड़ा तर लेगथिक आर बरेक बाप काका जेठा मसां फुफाएँ गहना पिंधाथिन।

गित- पितरअ पिंधाइते ससुर खुजुर मुजुर
काहे ससुर खुजुर मुजुर
ससुर! तरे घारे सामातउ-बाहरातउ
देखि ससुर नएना जुड़ाबे ग।

10. सिंदरा दान-

सेनेइ बदल हेल बादेइ सिंदरा दान हेइक। नाफिते बर कनेआ के नख खंटि आरता पिधाइन। सिंदरा दान नेग टा कनेआक माएँ नि देखए। मिनतुक ताकर बातराक जालाएँ बर घार ले आउअल 'नेटेइ', टाक सुता मंडप ले घार भितर तक जाइक आर कनेआए माएँ आपन काने लागाए। सिंदरा दान नेगेक माने हेलेइ बरे कनेआ के तिन धाँउ सिंदुर पिधातेइक आर कुटुम बाटुम कर हरिबल ध्वनि उचारन हेइक। एकर पेहिल सिंदुर भुंइअउ भिरात।

गित- "हुर हुर बांसेक घारअ
बर-कनेआ कहबर
काकरअ लिखलअ बिधिक घटन
बर कनेआक जुगल मिलन।

11. चुमान-गित-

बिहा हेल बादे बर कनेआ के चुमाने बसाथिन। कुरमि समाजेक कनअ संस्कार एका नि हेइक। सभे गतिआ कुटुमे मदत आनि-आनि देथिन आर नेग पार हेइक चाहे मरि-मरखि हेउक बा बिहा-सादि। जेए जेटा आनत सेइ टा चुमाने देथिन।

गित-काहे बाबा पसअले
काहे बाबा पालले ह
काकरअ आनगाहि गहगहि
बाजना बाजे
चिनहाए दे न ससुर मरअ ह
धनिक आंगनाहि गहगहि
बाजना बाजे
जेंए मके दुबअ गंजे
सेहे मरअ बाप हेके ग।

12. विदाइ-

कुरमाली बिहाक सउब लेक मार्मिक आर मिठा-मिठा दुखेक घड़ी। एक बाटे बेटिक बिहा देएक खुशि त दसर बाटे केरजि कर खांड़ा घार छाड़ि

दसर घार चलि जाएक कसटउ। एक बाटे नाउआ-नाउआ कुटुम संग नाता त दसर बाटे जनमाल छउआ, कराञ, काखाञ खेलि-कुदि बड़े हेलि आर आइज, दसर घारे पराधिन हे गेलि, ताकर दुख। बाराती रहअ बा सारति बिदाइ बेराएँ सभेक आंइखे लर ढरकेइक। बेटि छउआएं आपन आंचरे मुंह ढापत त बेटा छउआएं धोतिञ, हाथे लर पंछि आन बाटे चलि जात। कनेआक माइ एक बाटे लर पछले जाए त बेहिन दिदि गिलिन दसर बाटे। उठिन रहेक काकरअ साहस नि हेइक। तबे नेग हेकेइक सारे हेइक।

गित (क)- बाबा कांदे दरअबारे बाबा भकंरि भकंरि
डांड़ाबे बाजनदार माइ रा बाबा के मर बधअ
देए राखि।
माएं कांदे उचँ पिढ़ाए माएर चइखे बहेरे धारा
डांड़ाबे बाजनदार माइ रा, मांए के मर बधऊ देए राखि।
दादा कांदे कुलहि मुड़ाए दादा भेभाए भेभाए
डांड़ाबे बजनदार भाइ रा दादा के मर बधअ देए राखि
दिदि कांदे पखइर घाटे दिदि भिमाइए भिमाइए
डांड़ाबे बाजनदार माइ रा दिदि के मर बधअ देए राखि।
ख) एकअ कइखे जनम लेलि
भाइ अ बहिनि ग
ढंकरि पिअत माऐक दुध
काकरअ लिखल भाइ रे
अठारि बल कठारि
काकरअ लिखल परदेस
तहरि लिखल भाइ रे अठारि बल कठारी
हामर लिखल परदेश
ग) एकअ पेटे जनमिलि
भाइ बहिनि रे।
भाइरे हंकरि खालिह माएक दुध
तहरि जे खाउअन भाइ रे दहि-दुध भात रे
भाइरे-हामरि खाअन बासि भात
तहरि जे सअएन भाइ रे आलंख-पालंख रे

भाइरे–हामरि सअएन फाटल कांथा
हामारि जे सेअन भाइ रे हरतकि चपा रे
भाइरे–तहरि सेअन गुआ पान
तहे त लेबे भाइ रे बिसअ समपति रे
भाइरे–हामे जाबं परेकर कामिन।

13. संग छाड़ा-

बिदाइ कर बादे एकटा आरअ नेग आहेइक जेटा संग छाड़ा नेग कहाइक। कनेआक संगे छटे बेरा लेक एक संगे खेलल कुदल अकर संगि गिलिने छाड़े नि खजतिख। तखन बर संग हास–परिहास कर संगे संग छाड़ा दाम लेथिक आर गाँउएक सिमा तक बाहराए राखथिक आर एहे ठिन गाँउएक देउअता, भुता, चाइरअ दिसा, हावा, पानि, बाताबरन जाकर संग जिबनेक नाता रहेइक जेंए अके आइज तक रक्षा करल रथिक ताके गड़ लागि हमेसा कर खातिर छाड़ि चलि जाए।

गित–"जवाइं संग छाड़ा, पएसा देए राखा
संगति हामर लेले जाउआ रे।"

(2) विवाह गीत

आन-आन बिहा-गित

क) कनअ आंबा हरिहर
कनअ आंबा पिअर
कनअ आंबा सिंदुरे बरन
से-ह-आंबा बिछे गेलि
कनेआ कुंअर गअ
राजा बेटा धरअल आंचर।
छाडु-छाडु राजा बेटा
धरअल आंचर गअ
हामे हेकि कनेआ कुंअर
केसे के छाड़अबं धनि
धरलअ आंचर ह
हामे हेकि बर रे कुंअर
जे हे दिने तर बाबा टाका रे
गनाए देताक, से हे दिने
हबं रे तहर

ख) काहां भुलि पाए ग बाबा
चंदन काठे रे पिंड़ाह
काहां भुलि पाए ग बाबा पढुआ जाउआंइ।
बन भुलि पाए ग बेटि चंदन
काठे रे पिंड़ाह, आर देसअ
भुलि पाए ग बेटि पढुआ जवांइ।
काहां-काहां राखअबे बाबा
चंदन काठे रे पिंड़ाह आर
कांहा-कांहा राखअबे बाबा पढुआ जवांइ
बाड़िञ-झाड़िञ राखबं बेटि चंदन काठे रे
पिढ़ाह
आर माझ घरे राखबं बेटि पढुआ जावांइ
किआ दिए बधबे बाबा

चंदन काठे रे पिंड़हा आर
किआ दिए बधबे बाबा पढुआ जावांइ
फुल पाते बधबं बेटि
चंदन काठे रे पिड़ाह आर
मासअ--भाते बधअबं बेटि पढुआ जावांइ
पाहाड़ उपरे चढ़ि हांकअ मारे
तभु बापे नाहि सुने रे
तिन टाकाक लभे बापे नाहि सुने
दस लग के हाथ जड़े रे।
बेटि! दसअ कुटुमअ बड़अ आपनअ
चांदअ मुखअ बिसअरबे रे।
गिरि र उपरे चढ़ि हांकअ मारे
तभु मांए नाहि सुने, तभु मांए नाहि सुने रे
माए साड़िक लभे माए नाहि सुने
दस लग के हाथ जड़े रे
बेटि! दसअ कुटुमअ बड़अ आपनअ
चांदअ मुख बिसअरबे रे
पाहाड़ उपरे चढ़ि हांक मारे
तभु भाइए नाहि सुने, तभु भाइए नाहि सुने रे
साला धतिक लभे भाइए नाहि सुने
दस लग के हाथ जड़े रे।
बहिनि! दसअ कुटुमअ बड़अ आपनअ
चांदअ मुख बिसअरबे रे
चांदअ मुख पासअरबे रे।

'चउक पुरा' नेगेक गीत

उठु ग उठु बेटि
जागु ग जागु ह
उठु बेटि परहु बिहाक साड़ि
बसु बेटि चंदन चउखे ग
केसे हामे उठम गअ

केसे हामे जागम गअ
केसे हामे पिंधम बिहाक साड़ि
आंगनाहि चउख नाहि गअ
मां ग दिदिञ मरअ जबे चउख
पुराए देताक, तबे हामे बइसबं गअ।

ख) मरखि-

कुरमी समाज कर संस्कारेक भितरे इटाउ सउब ले बड़े नेग। जीउ मात्रेइ मरन आहेइक। अहे माहान मरल बादेइ नेग सुरू हे जाइक। कुरमी घारे लग मरले माटिञ तपथिन आर एखन पड़ाबअ करथिन। कुरमिक गत्र कर आधारे घाट हेइक। मिनतुक दुध खाउआ छउआक आलेदा घाट हेइक। मरल लग टाके हेरेइद तेल हाड़े गड़े माखाए देथिक आर खाटिङ सुताथिक। पुरूस मरले बहु राँड़ि हेए आर सांखा चुड़ि सभे गुचाए के 'मड़ाक' संगे दे पाठाथिक। मरल हाथे बहुक सिंदुर घेंसि राखेइक। चाइरअ पाउआएँ चाइर भाइए कांधे उभि सासान घाट लेगथिक। आघुञ आघुञ नाति-पुतिञ तेलाइए भुसा भरल आइग लेगत। मरल खबर गटा गाँउएक लगे जानलउ घाट जाएक खबेइर देथिन। आसे-पासेक बेटि-बहिन, मामा-फुफु आदि कुटुम ना पहंचले लास नि बाहराथिक। बड़े बेटाएं मुहे आइग देइक मड़ा ना तपल बा नि जरि सिराल तक लग सासान घाटेइ रहतला। सासान घाट बेटि छउआक जाएक माना। सासान घाटेइ पांच भाइ बसि के दिन धरत। आर अहे ठिन लेके लग खबेइर करेक जालाएँ खाँजात। तपल बा जरल बादे सभे काइ नेदि बा सेतिआएँ नाहात आर सभेएं लुगा भिंजात। घार आउएकं डहेर तिर धाँउ हरि बोला देथिक। घार आए कउ सभे काए गड़ धउअत तबेइ घार सामात। मड़ा घारेक सभे भइआद 'छुइत' हेत। तेल साबन नि माखत, हेरदि मसला तिअने नि खात। मांस, माछेइर त एक दमे नि छुथिन। हिंआ तक कि जेएं मुंहे आइग देइक ताकर उसना चाउरेक भात खाएक माना आर खाटिञ सुतेक माना।

कुरमी घारे तिन दिने तेलखेइर हेइक, आर दस दिने घाट कांहु कांहु गारह दिनउ करत। तेल खेइर छुए कुटुम, हित, मितान, घारेक बेटिछउआ एकेक टि नाउआ हांड़ि लेके आउअत। बांधे नेदिञ तेल खेइर छुइ नाहात

आर भिजल लुगाएं घार आउअत।

घारेक जे केउ बहुञ साइंझे 'मड़ाक' जालाए आरवा चाउरेक भात गांव बाहेइर तक दस दिन तक पहँचात। बिसास जे दस दिन तक अकर आत्मा घुरते रहेइकला। दसवां दिने घाट हेइक आर बेटा नाताक गटा भइयादे नख दाढ़ि चुइल सभे कामात। इगिला सउब पितृ दाए गिरत। एखरे के एहे दाए लेक पार करेक जालाएँ कुटुम आउअत। पिंधल लुगा नाहाल बादे फेकि देथिक। नाउआ नाउआ लुगा कुटुमे पिधाथिन आर पानिक भितर लेक धरि बाहराथिन। आर घार लेगथिन। मड़ा के जेसन बाज-बाजनाए विदाइ करथिक तेसने घाटे उठा कउ बाज बाजनाए घार आनथिन। बाज बाजनाक नेते नागरा ढल खल किरतन रहेइकला। आइज काइल कांहु-कांहु मंगल राइतअ करत। घुरि दिन दधि घलटन हेके शेष हेइक। आर खाउअन दाउअने लागि जात।

गित-मरखि गित कनअ विशेष आन गित रकम नेखेइक मरा लग टाक दुखित भाभे बाखान करा जेसन आइज तक किना करलाक, केसन रहे, उ नि रहले किना अभाव, हेतेइक एहे सउब लेके काँदि-काँदि अकर बाखान करत। बहुञ-राजा कहि बाखान करेइक, भउजिञ भाइ कहि बाखान करेइक बाकिञ बाप कहि बाखान करथिक।

(3) ब्रत-त्योहार गित

करम

कुरमाली लोक-गितेक भितरे ब्रत-त्योहार कर गित बेजाञ आहेइक। ब्रत बेसि भागे बेटि छउआएँ राखत। बिहान ले लेकरि राइत तक उपास रहतला। निजेक निजेक मनेक कामनाक जालाएँ प्रकृति देबेक संगे सझा-सझि सम्पर्क हेइक। उपास करि पुजा-पासा नेग जग करत सेइ टाइ ब्रत कहा जाइक। जेटाएं बेटि छउआ बा बेटा छउआ जे केउ हे पारत। अहे माहान कहा जाए पारेइक जे ब्रत राखि पुजा अनुसठान बा रिझ रंग आनंद करा टाइ ब्रत-त्योहार गित कहिह। कुरमी कर ब्रत त्योहार भितरे-जाउआ, करम, जितुआ, सेहरेइ (बांदना) टुसु, मनसा, भगता, आदि आहेइक। जाउआ उठा, भादर मासे कुरमी घारे डिड़ा बेटि छउनि गिलाएं उठात। आर जाकर एहे बछरे बिहा हेल रहेइकला, छउएइल माएं नि हेल रहति, जाउआ उठाएक तेहे सामिल हेए। ससुर घार लेक सभे नेग-जगेक सरम जाम आउएइक। जाउआ उठा छउआ गिलिने बेजाञ नेग-जगे पालन करत। जाउआ उठा छउआ गिलिन के पारबति, करमइति, बारातिरा, आदि नामे जानथिन। जाउआ गारह दिनेक उठात काहुं-कांहु नअ, सात, पांच दिनेकसा उठात। ताकर माने बिजड़ दिनेक उठात आर भादर एकादसि दिन करम गाड़त। भाई गिलिन उपास करि करम काटे जात आर एक चटे करम डाइर काटत। उटा के भुइंए गिरे नि देथिक झंकि लेत। भाइ गिलिन करम काटे जात तखन बेहिन सउब फुल लड़हे जात।

करमइतिकर बेजाञ नेग नेगा चार आहेइक। जेसन-भुंजल जिनिस नि खाता, तातल जिनिस नि खाता, चुइल छाड़ि नि नाहाता, तेल मसालक रांधल नि खाता, साज-गज नि करता, कंकइ-आरसी नि करता, खाटिञ नि निदाता आदि नेग कर पालन करे हेइक। इगिला करले एखर बिसास जे जाउआ (अंकुरे) असर हेतेइक। रजे जाउआ के हेरेइद पानिञ जागात ताकर बादेइ खात।

जाउआ के मेइचला उपरे सुरक्षित भाभे राखथिक आर रज साइझे अकर आरदास करत। सुरक्षाक तेहें जे से मुसाएं ना काटअ कहि गित गाए

धमकाथिक जेसन--

"जाउआ ना काटिस मुसा
जाउआ ना काटिस
तेतेइर सटाएं संटबँ मुसा
भरसि आइगे झलबँ।"

कुरमिक आदि देब 'महादेब' 'सिब जी' हेके। एरा सिबेक भकतअ हेकत। अहे माहान सिबजी, कर पुजा कनअ कनअ रूपे सभे व्रत-अनुसठाने पाउआइक।

जेसन 'जाउआ' जदि पारबति हेलि तो करम सिब। सेहरेइ (बांदनाए) सिब जी करे नन्दी कर सेवा। टुसू सिबे करे एक छाप जेटाएं सिब लिंगेक परिकल्पना। मनसा सिबेकरे बेटि त भगता सझा सझि सिब गाजन।

जाउआ गित-एति एति जाउआ
किआ किआ जाउआ
जाउआ जागालं मएं धान न बिरिआ
से ह रे ढाना एक पांता सए पांता
राढ़ हरिना चारि चारि जाए
हरिना के मारबँ सुअरि के जिआअबँ सरकइते हेठ गेलि खिदरलि पानिआ
पानिअ से उठि गेलि गोहमना सांप
छाड़ु-छाड़ु गहनमा बाट हामरे रे
बांटअ छाड़ले बहिन किआ किबा पाबे रे
पाअबं गहमना भाइअ करम गसांइ रे
पाहाडेहि आहे साठे मुनिस रे
हाए रे हाए दउरा उलटि ना जाइस रे
दे ह करम गसांइ दे ह आसिस रे
भइआ मरअ बाढ़अ त लाख बरिस रे

करम गीत-उपरेइ कहल गेल आहेइक करम भादर एकादशिक दिने आनगाएं गाड़त करम काटेकरअ कए एकटा नेग नेति आहेइक जेसन भाइ सभे उपास करत आर करम गाछेक पुजा करत। करम डाइर एक चटेइ काटाउक तेसने चट करत आर उटा के भुञे गिरे नि देथिक। कांहु-कांहु एकटी खुखड़िक आंड़ा लेगत आर काटेक पेहिल गाछेक पुजाक समइए

उटाउ राखत आर घुरि आए के जे खुखड़ि कर आंड़ा रहेइक ताके एकटा चिनहा देके घुराए देथिक। घरनि बसि जदि उ आंड़ा ले चेनगा बाहरति ता हले कुरमित्र आशा करत जे इ बछर परिवार, समाज, देश, विदेशेक समृधि क हेतेइक।

गित-फुल लड़हा
पाता तरे गेलरहं पतउछिआ रे
फुला लड़हे गेल रहं भेलंदिआ रे

करमेक सउआगत-करम काटे गेले दादा बनेक भितरे
करमइति बहिन दादा ससुर धारे
भादर एकादासि दिन दादा केसे के सेअबे
बहिन बिनु आनगाएँ कुरमअ गाड़बे।

सउआगत-''करम काटे गेले दादा
करम नि पाले
केरिआ बहु पाउअले दादा
मुँह मुचकाले।

करम बिदाई गित-आइज तरे करम राजा, घारे दुआरे
काइल तरे करम राजा कांस (कांसाइ) नदिक पारे
काकर डरे करम राजा घार सामाले
काकर डरे करम राजा घार बाहरा ले
लुतिक डरे करम राजा घार सामाले
माछिक डरे करम राजा घार बाहराले

एकर बादे जहाइर करम राजा कहि नेदि बाँधे भांसाए देथिक आर बादे बासि भाते पारना हे करि करम साँगअ हेइक। घुरि दिन आखड़ा मेटान नाच हेइक बेटा छउआ बेटिछउआ सभे आखड़ाए नाचत आर पेरेम भाभे प्रकृति देव फसलेक देव, कर नेग सिराइक एकर दर्शन बेजाञ गुढ़ आहेइक जेटाक जिकिर हिंआ नि करल जाइक ला।

पुजा-गित-आन दिने गउरि रहले कुंआर

आइज गउरि बिहा लेले जाइ।

आरअ-आरअ गित-

1) कुरथि रे कुरथि भुँजे बसल छटकि ननद
भुँजइते भुँजइते ननद पड़ि गेल
लाजे छुना गेला ससुर घार

2) बादला कर दाखिन सारे बुनलँ मए तिल
तिले झाबार-झुबुर फुले बउरा
आउअहिते-जाउअहिते तइड़ लिहा गअ
भइआ लगिन आँड़रि गाँथाएं दिहा गअ

3) काकर आनगाँए गाछ दारून जे
सामलता काकरअ अनगाएँ चांपा डाइर जे
भउजि कर आनगाएँ गाछ दारून जे
सामलता ननदि आनगाए चांपा डाइर जे
कइसन केर गाछ दारून जे
सामलता कइसन करए चांपा डाइर जे
लहलह करए गांछ दारून जे
सामलता महमह करे चापां डाइर जे।

4) छुटु मुटु दरूप गाछ
फुले लदअ बइद गअ
बेटि चललि ससुर घार गअ....
आजु का राइत बेटि रहि बसि लिहा गअ
आनि देबं पंइरिआ संदेस गअ
तहरि पँएरि माँ गअ तहरि उसास गअ
मरअ घारे ससुरअ बेजार गअ
ससुरअ मरले बेटि दसर ससुर पाबे गअ
काहाँ पाबे करमेका राइत गअ

बछरि बछरि माँ गअ करमे का राइत गअ
कहाँ पावँ मरले मानुस गअ काहां पावँ मरले मानुस।

5) टुंगरिका धारे धारे एकअ घार ताँति
अरे बुने रे लागल बुने लागल पड़हिआ पाँचन
टेड़ि बाटे दिहा ताँ ते चाँद सुरूज
दएआ अहरे आंचर रे बाटे आंचर बाटे
सातअ रे सइतिन
टेड़ि बाटे देखि तांति खुलु खुलु हाँसए
दएआ अहरे आँचर रे बाटे आंचर देखि
नएनाए बहे लर।

6) किआ लए सभएं सिरि बिंदा आखड़ा अहरे
किआ रे लए किआ लए सभे रे नइहर
संगि लऐ सभऐ सिरि बिदा आखड़ा-अ-हरे
माएँ रे लए माएँ लए सभे रे नइहर
किआ बिनु छुटए सिरि बिंदा आखड़ा अ-हरे
किआ लए किआ लए छुटे रे नइहर
संगि बिनु छुटए सिरि बिंदा आखड़ा अ-हरे
माएँ रे बिनु माएँ बिनु छुटे रे नइहर।

7) बासन माजे गेल रहँ बाबा के पाखरिआ
अ हरे हेराए रे आउलँ हेराए आउलँ
काने के कुंडल
कति जले आइले गेले, कति जले पार हेले
अ हरे कति जले हाराउअले कुंडल
हांठुक जले आउअलँ गेलँ डांड़ाक जले पार हेले
अ हरे मुड़ेक रे जले मुड़ेक जले हाराल कुंडल
सेहअ सुनि भइआ मर कांटा सुता लेए गेलाक
अ हरे खजे रे लागल खजे लागल काने के कुंडल

जेएं मर खजि देताक काने के कुंडल
अ हरे ताके रे देबेञ ताके देबेञ छटकि ननद

8) काहाँ काहां फुटए नेहरि रे
काहाँ काहाँ फुटए पाडरि रे
पाहाड़े हि फुटए नेहरि रे
गाढ़ाए ढड़ाए फुटए पाडरि
कन डालाएं राखबं नेहारि रे
कन डालाएं राखबं पाडारि रे
सने डालाए राखबँ नेहरि रे
रूपे डालाए राखबँ पाडरि रे
कन सुताएं गाथबँ नेहरि रे
कन सुताएं गाथबँ पाडरि रे
सने सुताएं गाथबँ नेहरि रे
रूपे सुताएं गाथबँ पाड़रि रे
कने मरअ पिंधत नेहरि रे
कने मरअ पिंधत पाडरि रे
भइआएं मरअ पिंधत ने हरि रे
संअएआए मरअ पिंधत पाडरि रे

9) कने तरअ छलए कुंजि कपाट दइआ अ हरे
कने रे छले कने छले रे जाहाज
भइआ मरअ छलए कुंजि कपाट दइआ अ हरे
सञाए रे छले सञाए छले रे जाहाज
कनअ धनि सुअए कुंजि कपाट, दइआ अ हरे
कनअ रे धनि कनअ धनि सुए रे जाहाज
भउजि धनि सुअए कुंजि कपाट दइआ अ हरे
हामे धनि हामे धनि सुअं रे जाहाज
कनअ धनि उठए लालि भिनसार दइआ अ हरे
कनअ रे धनि कनअ धनि उठे रे बिहान

भउजि धनि उठए लालि भिनसार दइआ अ हरे
हामे रे धनि हामे धनि उठं रे बिहान
कनउ धनिज धरए बाढ़े के बाढ़िन दइआ अ हरे
कइसन आवे कइसन आवे पानिहारिन
झलअ मलअ करअए सिरे के गागारि दइआ अहरे
झलकले आउए झलकले आउए रे पानिहारिन

जितुआ

कुरमी समाजे 'जितुआ' करअ बेजांइ माइन आहेइक। एसे त तिन निआर करम आहेइक। 1. भादर एकादसी करम 2. बुढ़ी करम, 3. दांसाञ करम।

जितुआ टाके बुढ़ी करम कहत। भादर एकादसी करमे जेसन डिड़ा बेटि छउआ एँ पुजा करत तेसने जितुआएँ छउआएइल माएँ गिलाएँ पुजा करत। जाखर उमेइर लगभग 45 लेक 50 कर उपर रहेइनला। जितुआइ करम निआर आनगाएँ गाड़त मिनतुक जिनिस पतर भिनु रहेइकला। जितुआएँ जे डाइर गाड़ाइक सेटा हेलेइक बर पिपर साँचि गुड डांड़ि हेन-तेन। इगलाइन के बरे मेधि राखथिक आर विधि विधाने पुजा करत। जितुआएँ मांऐक आकांछा रहेइकला जे मर छउआ निके सुखे बाँचि रहअ। जेसन करमे बेहिन कर आसा जे मर भाइ निके सुखे बांचि रहय। सभे देखा जाइक त एहे मनोकामना जे बेसि बछर बाचि रहेइक। आर घुरि-घुरि एहे नेग नेति पेंति बछर करेक।

बांदना (सेहरेइ, संहराइ)

कुरमी समाजे जतना ब्रत-त्योहार कर महत आहेइक अतनाइ 'बांदना' कर ब्रते महत आहेइक। आघुए कहल गेल आहेइक जे 'कुरमी' जुग-जुग ले 'चासा', 'किसान' हेकत ताकरे जालाएँ एखर जतना ब्रत-त्योहार आहेइक सभे कृषि संग संबंध आहेइक। ताकर संगे कृषि उत्पादन माहान जे जे गरू-काड़ा कामे आउअत बा कुरमिक दरकारेक जिउ-जंतुक संगे रहा बसा हेल आहेइक ताकर संगे रही आनंद करत। कुरमीज जतना आदर

आपन निजेक धिआ-पुता के करथिन अतनाइ आदर गरू-काड़ा छागेइर भेड़ि कउ करथिन। पेहिल गरू-काड़ाक जालाएँ भिनु घार (गहाइर) नि हे हेलेइक। गरू-बा काड़ाक संगे सुते हेला। चासेक गरू बा काड़ा मरले निजेक छउआ मरल निआर दुख आर कांदना हेइक। आइज भिनु गहाइर रहलउ अखर संग केउ न केउ सुतत। ताकरे माने हेलेइक कुरमिक प्रकृतिक संग कतना लगाव आहेइक। कारन एहे टाइ जिबनेक आधार हेकेइक।

'बांदना परबे' गरू-काड़ा के पेट भइर बेस बेस घास काटि खाउआथिन। जबे कि उ समइए कनअ काम नि रहेइकला। बांदना परब कारतिक मासे हेइक। कए दिन आघु लेक दुप घास आदि बाधि छाइने फेकत। नाउआ चुलाएं, नाउआ सारउआएं गरइआ पिठा छांकत आर पुजा करत।

बांदना गित 'देसेंइ' कर बाद लेक सुरू हेइक। देसेञ आसिन मासे हेइक। देसेञइ काड़ा कांदत कारन आर्य समाजे मां दुर्गाक पासे काड़ा बलि करथिन। मिनतुक देसेञ पार हेल बादे काड़ा खुब रिझे हेत आर एहे रिझेक संग कुरमिअ रिझात।

बांदना (सेहरेइ) कारतिक आमासं लेक उचरेइन हेइक। बांदना चाइर खेपे सिराइक। पेहिल दिन कांचा-दिआ, दसर दिन गरइआ तिसरा दिन बांदना, चउथा दिन बुड़ि बांदना इटा के जाहलि बुला बा झाँगइड़ा कहत। बांदनाक माने हेलेइक बंअदना पेहिल लगे बंदे हेलथिन। बंदेक माने आपन अरे राखना। एखन एहे बंदेक नाम टाइ बधेक बा आन लगेक हिसाबे बन्दना कह जाइक। जेटाएं गरू-काड़ा कर बाखान बा गुन-गान हेइक।

कांचा दिआ सारेइ पाते चुनि ढेला बाँधि बाति देकरि सभे दुआइरे-दुआइरे देथिक आर गरू काड़ा के अहे दिया देखाए गहाइरे भितराथिन। गरू-काड़ाक तेल माखा पेहिल लेके सुरू हेइक।

'गरइआ' दिन दुइ टा माटिक शिब-लिंग निआर बनाथिन आर सुरगुजा फुल बा सालुक फुल मुड़े दे करि नाउआ 'मेडुआहर' धानेक संगे गहाइरे पुजा करथिन। कांहु-कांहु काठेकरअ बनाथिन। इगिलाके 'भूत' नामे जानथिन। गरइआएं तिन रकम कर गहाइरे कटेइर बलि हेत 1. रंगुआ, 2. चारका, 3. काबरा जाएगा अनुसार कांहु-कांहु केरिआ पितपड़िया (खारमाखा) करअ बलि करथिन।

बलिक माने विभिन्न देउआ-भुता के खुस राखेक। जेसन-बाघुतेक आर धर्मक नामे बलि हेत। एसे त कुरमिञ भुतेक पुजा करत। आरं भुतेक मालिक शिवं भुतनाथ हेके। कुरमिञ बाघुत हुतुड़, जाताड़, चांड़ि, गंसाइ राइ, भितर बुढ़ी, भितर बुढ़ा, ग्राम, जाहिरा, भुञ, पाहाड़ आदि पुजा करत।

बांदना दिने गरू-काड़ा के खेला थिन आर रिझ रंग करत। गरू-काड़ाएँक निजेक निजेक किसान के चिनथिन। खेलाएक समइए गरू-काड़ाक रिझेक जालाएँ गित गाउअत। गिने गरू के बरअदा आर काड़ा के काड़उआ कहि समबोधन करथिन। इ दिन टा देसालाइर कहत। भिड़काल बा खेलाल गरू-काड़ा काकरअ खेते हेलि जतना धान खालउ कनअ कहेएक अधिकार नेखेइन। इ आइन टा कुरमी समाजे जुग-जुग ले चलि आउअल आहेइक।

बुढ़ि बांदना बरद खेला बा कांड़ा भिड़काक दसर दिन टा बुढ़ि बांदना हेइक। इदिन कनअ बाड़ि गाइ के खेलाथिक आर जाहलि भुला हेइक। जाहलि भुला जतना झांगइड़ा रहता गाँउएंक माहतो घार लेक खाएक पिएक सुरू करता आर पुरा गाँउएक घारे रिचिक-रिचिक हालउ खाता। जाहलि भुलाक जालाएँ पिठा, मास हाड़िआक बेवसथा घारे-घार रहेइकला। आर एक घार के आसिस देके दसर घार उचार हेत। डहरे-डहरे गित गाबिद करले जात।

गित- बांदना गित-

सउबले पेहिल शिब बाबा

आदि देव माहादेव, माने प्रकृति देव करे बाखान ले उचरेइन हेइक-

शिब बंदना-1. अ हिरे रे रे हि रेरे रेरे रेरे रे रेरे रेरे .

आर टालअ उपरे टालअ मंडप बनाउआलि
के हु त करे आउआदान रे
आर केहु मांगे अन्न धन
केहु मांगे पुत्र ह
के हु मांगे भंइसि बाथान रे
अ हिरे रे रे हि....
आ टालअ उपरे टालअ मंडप बनाउअलि
माहादेबे करे आउआदन रे

आर दुखि मागे अन्न धन
सुखि मागे पुत्र ह
अहिरा त मांगे भइसि बाथान रे

तेल माख गित

11. अ हिरे रे रेहि रे रे....
आर पुरब से आउअए छाता डुबि बरअदा ह
कबहु ना देखे डुभि भरि तेल रे
आर तेलऊ देखइते बरअदा कांदआए
सने पटअरे पंछु लरअ रे
अहिरे रे रि रे रे ...
आसिन गुदरइते बरअदा कारतिक मास आउए ह
देबं बरअदा डुभि भरि तेल रे

3. अ हिरे रे रे रि रे रे...
आर कनअ सिंगे लेबे बरअदा
तेल सिंदुर ह
कनअ सिंगे लेबे भिदुआइरअ रे
कांहाहि लेबे बरअदा टिकलि सिंदुर ह
कनअ अंगे झंकबे चुमानअ रे
अहिरे रे रे हि रे रे रे
आर बांउआ सिगे लेबें बरअदा
तेलब सिंदुर ह
दाहिन सिंगे लेबें मेदुआइर रे
आर कापाड़ेहि लेबें बरअदा टिकलि सिंदुरह
आठअ अंगे झकबें चुमान रे

जाहलि गित–

1. अहिरे रे रेहि रे....
खजा खजइते आलि पुछा पुछइते आलि

फानला का घारअ कति धुर रे
आनगाहिं आहे भाइ तुलसि का पिढ़ा ह
उपरे त घुरे हांसा राजा रे
अहिरे रे रे हि रे...
ना लागि दिगुआर, ना लागि कटुआर
ना लागि अतित फकिरअ रे
हामे जे हेकि भाइ रे दसअ घरेक पहना
झटअ बेगे करअबे बिदाइ रे

2. अहिरे रे रे हि रे रे ...
किआ लागिन किसानी हुलुकअ बुलुकअ ह
किआ सुनि ठाटि कनाए ठाड़अ रे
किआ लागि किसानी सुपे धाका देउअले
कुदि सामाले भितर घारअ रे
अहिरे रे रे हि रे रे ...
गितअ सुनि किसानी हुलुंकअरे बुलुकअ ह
बाजअना सुनि ठाटि कनाएं ठाड़अ रे
देएक तेहे किसानी सुपे धाका देउअले
कुदि सामाले भितर घारअ रे

आसिस गित-
अहिरे रे रे हि रे रे रे....
छु टु ह मु टु सिमइर आनगाहि लागाउए
से हे सिमइर बाढ़े रे आकासअ रे
आर एसनअ आसिस देउअबं ह अहिरा
से ह सिमइर बाढ़े सिंगा लाभ अ रे

बांदना (सहराइ)
क) अ हिरे! रे...
केहु जे आनए लता बल पता ह

केहु त आने कादा लेटा रे।
आर केहु जे आनए माटि के मिरदंगा ह
कुलहि माझे लहसले जाइ रे।
अ-हिरे! रे!....
आर भंइसि जे आनए लता बल पता ह
काड़ा त आने कादा लेटा रे।
आर बरअदा जे आनए माटि के मिरदंगा ह
कुलहि माझे लहसले जाइ रे।
ख) अ हिरे! रे ...
काहांहि उपजए सालु रे सुगा ह
काहां हि उपजए पान रे।
आर काहांहि उपजए चउरा-चंदन ह
काहांहि उपजए धान रे।
अ-हिरे! रे ...
बने झाड़े उपजए सालु रे सुगा ह
बेड़ा भुञे उपजए पान रे
देसे-देसे उपजए चउरा-चंदन ह
खिलि खेते उपजए धान रे।
ग) अ-हिरे! रे ....
कनअ बरन तरअ गातअ रे बरअदा
कनअ बरन तरअ सिंग रे
आर कनअ बरन तरअ कानउआ रे बरअदा
कनअ बरन दुइअ आंखि रे।
अ-हिरे! रे ....
बिजलि बरन तरअ गातउआ रे बरदा
हंसुआ बरन तरअ सिंग रे।
सुपलि बरन तरअ कानउआ रे बरदा
चाँदअ सुरूज दुइअ आंखि रे।
घ) अ-हिरे! रे ...
नाउआ लरअना, नाउआ लिपअना

नाउआ बासअने रसि मदअ रे।
नाउआ रसि मदे गड़अ पाखअरबे
जुगे माइ गअ रहतअ गड़ाइ रे।
अ–हिरे! रे ....
देबं–देबं लह–लह धान
आंचरे देबं पंछाइ रे
धुरि–फेरि गड़अ लागबं
जुगे माइ गअ रहत गड़ाइ रे।
ङ) अ–हिरे! रे ....
केहु चुमाए भाला झिरि–झिरि केंचुरा ह
केहु चुमाए धेनु गाइ रे।
आर केहु चुमाए भाला काने केरि सना ह
केहु चुमाए दुबअ धानअ रे।
अ–हिरे! रे ...
किसानि चुमाए भाला झिरि–झिरि केंचुरा ह
अहिरा चुमाए धेनु गाइ रे।
आर साइसे चुमाए भाला काने केरि सना ह
पुतहु चुमाए दुबअ धान रे।
च) अ हिरे! रे ....
कतिकअ नाचबं कतिकअ डेगबं
कतिकअ देखबे रंगअ रे
कादा छाड़ि धुरा रे उठिए गेल
चांद–सुरूज मलिछन रे।
अ–हिरे! रे ...
बारह महिना मागे भाट्अ भिखारी ह
आजु त मागे दसअ भाइ रे
दसअ भाइ के देअबे कांगाल निहि हअबे
रहि जातउ जनम जुगअ नामअ रे।
अ–हिरे! रे ...
ना लागे चइतअ ना लागे बइसाख

ना लागे पहिल भादर रे
आजु जे हेके भाइ पहिल अघनअ मास
झटअ बेगे करअबे बिदाइ रे।
छ) अ–हिरे! रे ....
एइसन दिसा किसान हामे नाहि देखअलि
अहिरा सउब के राखअले भुलाइ रे।
ना जदि आंटलउ ना जदि जुटअलउ
सझा मुखे देहु रे जबानअ रे।
अ–हिरे! रे ....
रागे रागाले बाबु मन खिसिआले
कुदि सामाले भितर धारअ रे
एह कना टमअड़ले अह कना टमअड़ले
टमड़ि पाउअले हाड़िक मदअ रे।
ज) अ–हिरे! रे .....
किआ लागिन पसअलि लालि चरइआ ह
किआ लागिन पसअलि गाइ रे।
किआ लागिन पसअलि बलिमान बरदा ह
कनअ ठिने देबं हुमुचाइ रे।
अ–हिरे! रे ....
देखे लागिन पसअलि लालि–लालि चरइआ ह
दुधअ लागिन पसअलि गाइ रे।
जते लागिन पसअलि बलिमान बरदा ह
खिलि खेते देबं हुमुचाइ रे।
झ) अ–हिरे! रे ....
कनअ बादरि घाटा घुमअरि
कनअ बादरि माहाजाल रे
कनअ बादरि संइआ सइतिनि ह
जाए ना देला नइहरआ ह।
अ–हिरे! रे ...
चारका बादरि घाटा घुमअरि

रंगुआ बादअरि माहाजालअ रे
करिआ बादअरि संइअ सइतिनि
जाए ना देला नइहरआ रे।

चांचर डहरउआ-

इ गित गिला जखन एक घार ले दसर घार उचार हेत तखन डहरे डहरे गाउअत अहे माहान इगिलिनेक नाम डहरउआ गित हेलइक।

1. इ बाड़िकर झिंगा लत, हाउ बाड़ि के जाए
बड़े घारेक बहु बेटि, झिंगा चराए खाए

2. छुटु मुटु गुंडरि रे भाइ, गुड़गुड़ाले जाए ह
बांड़दा बुढ़िञ कहे किना मरे भातार जाए ह

3. इ छाइन कर बांदअरा हाउ छाइन के जाए ह
छाइने-छाइने बांदअरा किना फर के खाए ह

4. सांकट सांकट गलि रे भाइ हाथि नाहि चले ह
राजाक बेटा गुपिनाथ खड़अमे चापल ह।

टुसु

'टुसु' कुरमी समाजेक सउब ले आनन्देक परब हेकेइक। व्रत गित त्योहारेक हिसाबे टुसु उमंग आर उत्साह कर परब। टुसुक थापना अघहन सांक्राइते हेइक। गाँउएक टलाक बेटि छउनाए उपास करि धुप, चुनि, सिंदुर गोबर, फुल, हेन तेन देकरि साइझें टुसुक थापना करत। टुसु कुरमी समाजेक शस्य देवी अन्न धन्न लखी लक्ष्मी डिनि बुढ़ि डिनि जिरान, नामे जाना जाए। कांहु-कांहु दिनि ठकुराइन नामउ जानथिक। धन लक्ष्मिक जे कनअ काम साइझे हेक। दिनि बुढ़ि खेत ले आनेक कामअ साइझेइ हेइक, बांइद ले धान बाहराएक काम सांइझेइ हेइक, तेसने टुसुक थापनाउ साइझेइ करत। ताकर माने कुरमिक धन सम्पतिक जतना कारबार साइझ बेरांए हेइक।

'टुसु गित' अघहन सांक्राइत ले ले करि पुस साक्राइत तक अबिरल गति उमंग आर उत्साह कर साथे चलेइक। कुरमी घारे खाएक पिएक, धन सम्पत्ति घारे परिपूर्ण रहेइकला। एहे देखि रिझे लग मातु हेत आर खुसी कर ठेकान नि रहेइकला।टुसु गित त मुंहे मुंहे भरल रहेइला। अहे माहान टुसु के जे रूपे देखथिक गिते अकर बाखान करत। टुसु कखनअ शिशु छउआ कखनअ बिहइलि कखनअ चारवाहि, कखनअ रांड़ि, कखनअ छाड़ि, त कखनअ रसाल। अहे माहान टुसु गित श्रृंगार ले पार हे के अश्लील तक पहुंचेइक।

झारखंडे कए एकटा त्योहार आहेइक जेटाएं आदिम जुगेक संस्कृतिक छाप पाउआ जाइक। कखनअ कखनअ हड़प्पा कर शिव लिंगेक पुजाक संगे जड़ि देखा जाइक। कखनअ कखनअ अजंता एलोराक पाथरेक नक्कासीक रूपेक छाप पाउआ जाइक।

एहे रूप के गितेक माध्यमे व्यवहार झारखंडे एखनअ आहेइक। जेसन–'हाइ बुरू', 'पाहाड़ बुरू' , 'टुसू' माहान जे अश्लिल पाउआ जाइक इ गिला रिझेक आर आनंद कर पार हेल अवस्था टा कहा जाए पारेइक।

'टुसू' एक मास तक रहल बाद पुस सांक्राइते हेंगड़ा चउड़ल संगे विसर्जित हे जाए। आर पेहिला माघे मेलाक आयोजन हेइक। जाहाँ सभे कुरमी समाजेक लगे बा एखर संग रहत से आन जाइतेक लगउ नाउआ–नाउआ लुगा फाटा पिंधि 'टुसू मेला' आउअत। एहेदिन कुरमिक एक बछर पूरा हेइक। घारे काम करा धांगर, चारवाहाँए, माघ मास करत। आर एक आध दिनेक जालाएँ निजेक घार जात आर अहे घारे दांगर रहेक मन हले घुरि आउअत। टुसू दिने कुरमिञ आन जाइतेक संगे 'फुल जड़त'

पेहिला माघ दिन कुरमिक पेहिला हार खेते तिन बार, पाँच बार, सात बार घुरेइक। घार आउअल बादे गरू, काड़ाक गड़ धए के सिंगे तेल माखाथिन। ताकर बादे गबर काटत आर बेस बेस पाकवान खात। इटा आंखाइन जातराक नामउ जानत। आखाइन माने सूर्य हेइक। सुरूजे मकर रेखा लेक कर्क रेखाए आउएक जातरा शुरू करए। कुरमी समाजे सुरूज के पिता आर धरति के माता कहथिक। दुइअ कर औरसे फसल उत्पादन हेइक अहे माहान दुइअ कर माइन बेजाइन। ताकरे जालाँए कखनअ 'सुरूजहि' पुजा त कखनअ 'भुञ पुजा' हेइक।

टुसू थापना कनअ एकटा निर्दिष्ट जाएगा के साफ करि उपरे लिखल सामग्री कर साथे टुसू थापना हेइक।

गित- "हामरा जे मां टुसू थापि
अगहनअ साक्राइते लअ
अगहनअ साक्राइते टुसू
हाँसि-हाँसि जाबे लअ
पुसअ सांक्राइते टुसू
कांदि-कांदि जाबे लअ
हामरा जे माँ टुसू थापि अगहनअ साक्राइते लअ

2. आइलअ रे घुर घुरनि पका
दखिन दिगेर बासाते
आइलअ रे सनारअ पालकि
टुसू धन के लेगिते
टुसू लेइगछ भालअ कइरछ
टुसू राइखअ जतअने
हामदेर टुसू सिसु छाइला
दुखेर मरम जाने ना
3. एक सड़अपे दुइ सड़अपे
तिन सड़अपे लग चले
हामदेर टुसू एकाइ चले
बिन बासाते गा डले
4. हेठे पाटा उपरे पाटा
तार भितरे दारअगा
छाड़ दारअगा, रासता छाड़अ
टुसू जाछे कइलकाता
कइलकाता गेले टुसू
मकअदमा कि हइलअ
मकदअमा डिगरि हइलअ
साहेब साला चालान गेलअ

5. पुस मासे कि चांद उठेछे
चांदेर बड़अ आलअ ल
एमनेइ आलअ करबे टुसू
खेइल कदमेर तले ल
खेइल कदअमेर तले टुसू
नाना रंगल सुपअलि
बाछे बाछे सुपलि लिबअ
ननद खेला करिबअ
अहरे ननद डुबलअ जले
ननद के छांइकबअ ल
माएआ जाले, माएआ जाले
ननद डुबलअ जले

6. पुरूबे उठिलअ तारा
सेइ तारा टि मेघ तारा
जखन डुबे अइ तारा टि
तखन मरे खालबरा
अहरे बनेर कालइ चरा
हामदेर के गाइर दिहअ ना रे
साइझ बेरा साइझ बेरा
बनेर कालइ चरा

हंसि-मजाक आर रमांटिक गित-

इ निअर गित गिलाइन गाँउ ले बाहेइर टाइड़े टिकरे निचाले जेनि मरद सभेंए गाउअत।

गित 1. तके देखे छी सिसु काले
नाम जानि ना डाकबअ कि बले
2. तर साइकिल टार हेंडिल बांका
कन दुकाने लिले रे बका

3. माड़ खाबे डुभा-डुभा
साइकिल चाला हबि रे कुबा

4. लाले लाल बिलाति पाका
धइरे देखे कांचा न पाका

5. कांचि नदिक सितलि बासाते
छंड़ाक धति उड़े आकासे

6. डांडाउ हे संगे जाबो
एक खिलि पान दु झने खाबो

7. मुनगा डुटुञ फुल फुटे
जेमन छंड़ि तेमन सुर उठे

टुसू चौड़ल विसर्जन-

टुसू चौड़ल विजर्सन साइझ पहरा हेइक। पेहिले कहल आहेइक जे टुसू शस्य देवी अहे माहान एकर जतना कारबार आड़ाले, बा सांइझे हेइक। जेसे केउ ना देखे पारत। लखी के हमेसाइ लुकाए के राखेक नियम। अहे माहान जखन भासान बा विसर्जन हेइक तखन इंद्रजाल बेटि छउअनाए बनात आर हुबुक-डुबुक करि जेसे केउए देखे ना पारत कहि चट से डुबाए देथिक। आर एहे माहान पानी झिंटा-झिंटाइअ हेत। जेसे आंइख नुबि राखत।

गित-1. तके टुसू जले दिबो ना
हामार पुराउ मनेर बासोना
2. टुसू देखो ससुर घार जाछे
टुसू के अनिबो घुराइ पुस मासे
3. जलेर भितर टुसुर के आछे
जलेर भितर ससुर घर आछे

ऋतु गित

ऋतु गित मउसम कर आधारे जे गित गिलाइन गाउअत अहे गित गिलिन के रिंतु गित कहथिक। कहबि आहेइक 'बारह मासे, तेरह पुजा'। अहे माहान बारह मासिआ गित, भादरिआ गित आसाड़िआ गित। कुरमीक इटा सउब ले बड़े बिसेसता जे भादरिआ गित भादर मासे गाउअत, असने आसाड़िआ आसाड़ मासे, गाउअत टुसु जेसन पुस मासे तेसने सेंहरेइ (बांदना) कार्तिक मासे गाउअत। तेसने बिहा गित पुस बासि बा माघ मास ले गाए सुरू करत। झुमेइर गित निरन मासे गाउअत जे मउसम (रितु) टा जखन आउएक अहे आधारे कुरमिञ गित गाउअत। बे मउसमे गाउअले गाते खसु हेथिन नि हले फड़ा बाहराथिन। आघुए कहल गेल आहेइक जे कुरमिक लोक गित गिलिन, जादु, मंत्र, टना, टटका हेकेइक।

भादरिआ गित–भादरिआ गित भादर मासे गाउअत। भादरिआ गितेक नामे भादरिआ सुरअ बनल आहेइक। जाएगा अनुजाए कांहु–कांहु तमाड़िआ सुरअ कहल जाइक।

गित– 1. दिने–दिने पहुंचत, भादर तिरितिअ
तभु नाहिं, पिआ आउअत सखिआ,
तभु नाहिं।
घरे–घरे उलसितअ सभे जुबतिआ
गुनि गुनि रे गुनि गुनि
मरअ सालंख छतिआ गुनि गुनि रे गुनि गुनि।

आसाड़िआ–

आसाड़े त पानी नाइ
सराबनेउ नाइ
भादरअ आसिनउ दागा
देलि बरिसाए धान गेलि रे सुखाए
बछर बछर पानि नाइ
इ बछरउ नाइ
सुरूजेक खराए आगुन दिसा उड़ि
जाए धान गेलि रे सुखाए।

रोपा गित

एसन गित गिलाइन बेटि छउअनाएं धान रपेइत के फेदान मेटाएक जालाएँ गाउअत। एसन गित नाना रकमेक विषयेक हेइक-

गित-एका लिका झिका सासु दुइअ लिका झिका गो
तिनि झिकाए उठि गेला मागुरी माछरिया
कंदे गेले किआ भेले बड़कि पुतअहिया गो
लेहरे बहु मांगुरी माछरिआ
कंदे गेले किआ भेले सासु दुलारू गो
धए ले लो मागुरी माछरिआ
कंदे गेले किआ भेले बड़की पुतअहिआ
दे ह बहु तेल के सिसिआ
एतना सुनले सासु चलि गेले दकानिआ
कंदे गेले किया भेले दकानी भाइ रे
दे हु भाइ तेल हरदिआ
एक कस आउले सासु दुइ कस आउले
तिनि कसे आपन धरउआ
कंदे गेले किआ भेले बड़की पुतअहिआ
ले हु बहु तेल हरदिआ
राँधे बहु मांगुरी माछरिआ
आगे काटिहि बहु पाछे काटिहिं गो
माझे हि खनिचाउ न टे गे
कंदे गेले किआ भेले सासु दुलारू गो
भुंजअ सासु मागुरी माछुरिआ
कंदे गेले किआ भेले बड़की पुतोहिआ
रांधु बहु मांगुरी माछुरिआ
कंदे गेले किआ भेले सासु आपन गो
रांधिए बाटिएं सासु भेला समतुल गो
कंदे गेले किआ भेले बड़की पुतोहिआ गो
चाखि लेहु मागुरी माछुरिआ

कंदे गेले किआ भेले सासु आपन गो
चाखि ले ले मागुरी मछरिआ
आन दिन देखं सासु बेजाय मन झन गो
आइज काहे सासु मने बेजाञ खुश गो
आजु से उअअतउ सासु बाप लेनिहार गो
अहे लागि बेजाञ मन खुश गो
कंदे गेले किआ भेले सासु आपन गो
हामे सासु निदे ढुलु ढुल गो
कंदे गेले किआ भेले बड़कि पुतोहिआ गो
आना दिना देखो आमा अहरि देहरि
आज काहाँ धनि के पाठाले गो
तहरि धनि पुता बड़ी नठ नाठल रे
चलि गेलएँ आपन ससुरार रे
कंदे गेले किआ भेले बड़का सार हे
तहरि बहिन नइहर रूसि आल हो
जखन जहलँए बहनइ अपथ गेआन हो
तखन नाहि बहिन रूसि आल हो
खेलने बइसत छट साली गो
तहर बहिन नइर रूसि आल गो
एतना सुनले पुता कहल बतिआ ही
कइसे के धनि के जागाबँ हरि
मांदर झांझर बाजाए धनि के जागाबें ह
तबे धनि जागात तहर हो
एतना सुनल परे पुता घार घुरि आउअल हो
मांदर बाजाए धनि के जागाउए हो
उठु-उठु धनि खलु कपाट कुंचि ह
दुआरिहिं तहर माएँ-बाप ठाड़ ह
जनमइते खेलं सामि माए रे आपन ह
चलइते खेलं सामि बाप ह
खेलइते हारालँ सामि सहदर भाइ ह

माछ कहि लेलं सामि गहमन सांप ह
माछ कहि हामके खाउआले ह
एतना कहि धनि मुँदल आखिआ ह
छड़ि देले देस दुनिआ ह

कनअ कनअ रपा गित छुटु-मुटुअ रहेइकला जे गिलिन दुइ डांड़ि चाइर डांडिक हेइक। जेसन-

1. छुटु मुटु डुलु छुआ
पुइछे बाँधल सुता रे
हे राम उड़े लागल
सरगे पाताल जे
2. बाड़ि बाटे कड़अ आंड़ा
माछ लागे टेंगरा
अहे छटअ देउअरा
कन फुले ते बइसलअ भामरा
3. चाइर कना पखइर कना
कुमनि अड़ा जाए ग
तर माछेइर चुना चुना
बालि मेसा जाए ग

जातरा गित

उधवा-जखन लग धुर देसेक जातरा करत तखन इ रकम कर गित गाउअत। चलि-चलि जखन थकि जात तखन मन बाहलाएक जालाएं उधवा गित गाउअत। उधवा गित निचाल एकांत आर राइते गाउअत आर गांव ले धुर हाटि के गांउअत। उधवा गित माघ मास ले आसाड़ मास तक गाउअत। उधवा गित दम जरे हांकाए के गाउअत। उधवा गिते प्रेमी-प्रेमिकाक हास-परिहास कर वार्तालाप रहेइकला। दुइ डांड़िक रहलउ घुराए फेराए के एक आध घंटा गाउल जाइक। कनअ समइए संगि-संगि करअ लेके हांसि मजाक कर गित बनाए के गाउअत। एक झने सवाल करए त दसरे जवाब देइक।

गित-

1. **प्रश्न**-सहर सिखर नागपुरेक
डेढ़ि पिंधना ह
चलअहिते जांघिया उघार
उत्तर-इ किना देखअले भाइ
नाउआ नउतन रसिका ह
नागपुरे छतिआ उघार

2. **प्रश्न**-टिहलांइ चढ़ि हांक पारे
बरदि गरखिआ ह!
हें ह काकरअ बिहलि ले ले जाए
आंखि तरअ फुटए बरदि गरखिआह
हें ह आपनअ बिहलि ले ले जाए

3. बांधअ जे देले राजा ह
देसे केरि आड़े ह
हें ह पिढ़िआ जे देले अजए गड़
झलकले आउअए मुड़े के
गागरिआ ह
हें ह मलअकले आउए पानिहार

4. आस जे देले माइ गअ, भरअसा जे देले ह
निम तरे राखअले डांड़ाए
खंइचा का चाउरे माइ गअ भटि भुलाए राखअले ह
निम तरे राखअले डांड़ाए।

विविध गित

ढप–कुरमाली माहान ढप एकटा विशेष वाद्य जंत्र हेकेइक। ढप लोक–गितेक संगे इ बाजा टा बाजेइक। बाजा दम रागे रागे बाजात। ढप गित बेसि भागे अध्यात्मिक हेइक। एकर अरथे गुढ़अ तथ्य रहेइकला। साधारन भाभे अर्थ बुझि पाना मसकिल हेइक। प्रकृतिक बाखानेक संगे विभिन्न देबी देवताकरअ बरनन हेइक। ढप लोक गिते ढप वाद्य जंत्र छाड़ा अन्य कनअ बाजना नि बाजेइक।

गित–1.

सरग बनदी सरग देवता
पाताले बनदी नाग हे
ससअगड़ा पिराथिबिते
जतब देबअ सिरि बनदी
गुरु बनदी सुदन राम राम
बिसरल गित मर दिहा मने करि
हे ढप बाजतअ निराधार ह

2. हे हरि ह सात सो चौदह हाथी
कौआ लेले जाए। काके कहँ रे दादा
के सुने के पतिआए

ढप–क) आंइआ बनदि मांइआ बनदि
सरगे पाताले बेरा बनदि।
फालनति नजअइर बनदि
फालनति मुख बनदि
एक खांड़ चुरासि बान माञ भबनि मड़ा पान
कने गतर बांधइ, गुरुञ बांधइ।
गुरुक आज्ञाए मञ बांधइ
काकर आज्ञाए, बुढ़ा बाबा माहाभाएक
आज्ञाए! चाड़े लाग।

ख) किना बिनु घार सुइन भाइ
किना बिनु हिआ सुइन।

किना बिनु नदि सुइन भेल,
सखि रे एकला गाँउआले निसि रातिआ।
अनन बिनु घार सुइन भाइ
पुत्र बिनु हिआ सुइन
इन्द्र बिनु नदि सुइन भेल
सखि रे पुरुस बिनु गाँउआले निसि रातिआ।

करम-गीत

आम पात चिरि-चिरि कागज जरि
देखा गअ, हामे बापु कति दिन कुंअर
तहरि बिहा बेटा नाने बालके गअ
तहरि तिरिआ मरि हेराए गेल।
हामअरि तिरिआ बापु मरि हेराए गेल
छाउ-बानि देहु न देखाए
पुरुबे का अनाल पानि
पछिमे चलि गेल ह, छाउ-बानि
लेगअल छउआए
छाउ बल बानि बापु लेगलअ छउआए
गहना गांठि देहु न देखाए
नाउआ बाभन बेटा, नाउआ गसांइ ह
गहना गाँठि लेगअल दान।

करम-गीत

भासान
क) तँए तरे करम राजा जाबे हाँसि हाँसि
मँए तरे करम राजा जाम काँदि-काँदि।
ख) जाहु-जाहु करम राजा
ए! ह! छअ मास
आउअत भादर मास
आनबँ घुराए।

करमेक आन गित

क) आँउरा रे आँउरा उगिआ
डाइरे छाड़ि पाते फर धरे
बापु गअ मर निरबुधिआ
देसे छाड़ि बिदेसे बिहा देल।
जेह पथे हामे चलि जाए
से ह पथे दुब लरूआए।
ख) बाप घार उचँ-उचँ
ससुर घार हिनअ-हिनअ
अ-रे किआ देखि बापे बिहा देल
हामरि नजर बेटि तहरि कपाल, बेटि
अरे जड़ि रे देखि जड़ि देखि बिहा देल।
ग) धान घांटे गेल रहं रायकचाक धार
भिंजि रे सिठि भिजि सिठि दुआरे हिं ठाड़।
लेहु धनि कुलुप काठि, खलु धनि सनदुकं ह
अरे पिंधु ह धनि, पिंधु धनि तसरेक साड़ि।
एकअला ना साजे परभु तसरेका साड़ि ह
आरअ साजे आरअ रे साजे टिकलि सिंदुर।
टिकअलि सिंदुरा परभु एका नाहि साजे ह
आरअ रे साजे, आरअ साजे करांए रे छउआ।
घ) एतेक बड़अ राइत परभु एतेक बड़अ दिन
अ-रे काहां ह परभु काहां परभु खेपअले राइत।
आखअड़ाहिं आहे धनि दसअ भाइएक बसागत
ताहां ह धनि, ताहां धनि खेपअलं राइत।
से ह कहले परभु, हामे नाहि पतिआब
अ-रे तुलअसि छुले हामे परभु ताबां तुलसि
तांबा तुलअसि छुले हामे मरि जाब
अ-रे मेटि रे जातउ मेटि जातउ सिंथेके सिंदुर
सिंथेके सिंदुरा परभु से-ह हामे तेजबं
अ-रे निहि लेबं निहि लेबं सइतिनि झाड़।

ङ) काहांहि ह देउअरा गइआ रे चाराउअले
अ-हरे काहांहि पानिआ पिआए।
काहांहि ह देउरा गइआ रे गठाउअले
अ-हरे काहांहि ह देउअरा बांसिआ बाजाए।
रने-बने ह भउजि गइआ रे चाराउअलँ
अ-हरे माला रे दहे माला दहे पानिआ पिआए
बउरा तरे ह भउजि गइआ रे गठाउअलि
अ-हरे डाइरे रे चढ़ि डाइरे चढ़ि बांसिआ बाजाए।
किआ लागिन ह देउअरा गइआ चाराउअले
अ-हरे किआ लागिन पानिआ पिआए।
किआ लागिन ह देउअरा गइआ रे गठाउअले
अ-हरे किआ लागिन बांसिआ बाजाए
चारा लागिन ह भउजि गइआ रे चाराउअलि
अ-हरे छापर रे लागिन छापर लागिन पानिआ पिआए
दुध लागिन ह भउजि गइआ रे गठाउअलि
ह-हरे धनि रे लागिन धनि लागिन बांसिआ बाजाए
च) कने मरअ लेए देताक सरू-सरू साँखा
अ-हरे कने रे मरअ कने मरअ आने रे सइतिन।
भइआएँ मर लेए देताक सरु-सरु साखाँ
अ-हरे संइआएँ रे मर, संइआएँ मर आने रे सइतिन
हाँसि-हाँसि पहिरबँ, कांदि-कांदि परिछअबँ सइतिन।
भांगि-फुटि जानउ सरू-सरू साखाँ
अ-हरे रहि रे जातउ रहि जातउ जुगनति सइतिन।
बाढ़ि-साढ़ि बाहिराबँ सरू-सरू साखाँ
अ-हरे घिसिंआए, घिसिंआए बाहराबँ सइतिन।
छ) बाड़ि हेठे रेल चले गउरि बेटि जांताए भरे
अ-हरे देखे रे आउअला देखे आउअला ससुर घारेक लग
केहु कहे काठि देब, केहु कहे माटि देब
अ-हरे केहु रे कहे, केहु कहे जबुनाए बहाब।
ससुर कहे काठि देब भेंसुर कहे माटि देब

अ-हरे संइआएँ रे कहे, संइआए कहे जबुनाए बहाब।
केहु कहे तिन दिन पालन केहु कहे पांच दिन
अ-हरे केहु रे कहे केहु कहे दसअ दिन पालन।
ससुर कहे तिन दिन भेंसुर कहे पांच दिन
अ-हरे संइआएँ रे कहे सइआंए कहे दस दिन पालन।
केहु कहे साग-भात केहु कहे दाइल-भात
अ-हरे केहु रे कहे, केहु कहे खासिआ काटब।
ससुर कहे साग-भात, भेंसुर कहे दाइल-भात
अ-हरे सइआएं रे कहे, सइआंए कहे खासिआ काटब।
ज) दुइअ मिलि गेले देउरा
एका घुरि आउले
अ-हरे कांहा ह देउरा, कांहा देउरा
राखले पिठेके भाइ
हामरि जे भाइ भउजि बड़अ रिझुआड़
दइआ, अ-हरे बिजु रे बने बिजु बने
खेले रे झुमइर।
केथिञ भिंजल देउरा हेरेइद रांगल धतिआ
दइआ, अ-हरे केथिञ रे भिंजे, केथिञ भिंजे तालउआइर।
सिसिरे भिंजिले भउजि, हेरेइद रंल धतिआ
दइआ, अ-हरे रकअते भिंजअलि, रकअते भिंजअलि
तालउआइर।
काके मारअले देउरा, काके पिटअले, दइआ
अ-हरे काके रे, कइले काके करले सिसु राँड़।
काकउ निहिं मारअ भउजि
काकउ निहि पिटअं दइआ
अ-हरे भाइ रे काटि, भाइ काटि
भउजि सिसु राँड़।
भाइ काटि भउजि करअले सिसु राँड़
दइआ अ-हरे लेहु रे देउरा लेहु देउरा
भउजि आपा मार।

झ) बारह बछरे सासु भइया लेगे आउए गअ
हामे सासु जाबँ नइहर गअ, हामे सासु जाबँ नइहर।
हामे नाहि जानँ बहु तहरि बिदाइ गअ
पुछि लेंहि ससुरा के जाए।
बारह बछरे ससुर भइआ लेगे आइए गअ
हामे ससुर जाबँ नइहर गअ हामे ससुर
जाबँ नइहर।
गाँउएका मुड़ाए बहु नदिआ भराल गअ
केसे करि जाबे नइहर गअ, केसे करि जाबे नइहर।
आम पात चिरि-चिरि नउका बनाबंअ गअ
नउकाए चापि जाबँ नइहर गअ नउकाए
चापि जाबँ नइहर।
आघ नदि गेलि भाइरे, माझ नदि गेलि रे
माझ नदिञ नउका भाँसलअ रे, भाझ नदिञ नउका
भासअल।
माए के ना कहसिक भाइ रे, बेटि भांसि गेलउ रे
माए त कांदति चाइरअ धार रे, माए त....
बाप के ना कहसिक भाइ रे बेटि भांसि गेलउ रे
बाप त कांदतअ मजलिसे बाप त.....
दादा के ना कहिस भाइ रे बहिन भांसि गेलि रे
दादा त कांदत चाइरअ धार रे, दादा त....
दीदी के ना कइसिक भाइ रे बहिन भांसि गेलि रे
दीदी त कांदति ससुर घारे रे, दीदी त....

करम गीत

कांहा मालिन बाजे जड़ा रे धमसा सुना
मालिनि गे! कांहा मालिन बाजे कर ताल, सुना...
आखड़ाहिं बाजे जड़ा रे धमसा सुना,
मालिनि गे! राजा घारे बाजे करताल! सुना ....
केसन! केसन! बाजे जड़ा रे धमसा सुना,
मालिनि गे! केसन-केसन बाजे करताल, सुना...

हाकुड़! गुडुम बाजे जड़ा रे धमसा, सुना
मालिनि गे! छुमुर-छुमुर बाजे करताल! सुना...

एढ़ेइआ--कुरमाली माहान एढ़ेइआक बेजाञ चलन आहेइक। मिनतुक एखन लगे विसरले जात ला अहे माहान, एढ़ेइआ निआर लोक गित गिला धिरे-धिरे सिरले जाइक ला। इ रकम कर गित गिलाइन बेजाञ मार्मिक आर सरस हेइक। नाच आढ़ाइ डेगे नाचत। अहे माहान गित आर नाच कर बेजाञ ताल मेल रहेइकला।

गित-बाघ मुड़िक पाहाड़े
हाड़ार हुडुर पाखना
काहाँ जाहिस रे नदि सुतना
सुनि ले मर बिछिआक बाजअना
काँधे छाता गड़े जुता
काने आहउ फुल गंजा
काहा जाहिस रे नदि सुतअना
हिलउ धति डुलउ फुदअना
भालअ बापेक बेटा हेबे
अझइदा सिकार जाबे
काहाँ जाहिस रे नदि सुतअना
सिकारे बिकार करिस ना •

छउआ खेला गित

कुरमाली माहान छउआ खेइल गितेक बेजाञ महत आहेइक। गाँउएक, टलाक छुटु-छुटु छउआ तीन बछर ले लेकरि दस बछर तक कर छउआ एक संगे मिलि गित गाउअत आर खेलत। इ रकम कर गिते प्रकृति आर सामाजिक चित्रण रहेइकला। कनअ समइए रउदेक जालाएँ गित गाउअत त कनअ समइए बेइरसा क पानि हका करेक तेहें गाउत। इ रकमेक गित बेजाञ सरस आर सरल रहेइकला। मनोरञ्जन कर संगे संगे उत्साह आर उमंग भरल रहेइकला। कखनअ-कखनअ रंग करेइत के ढंग हेइक आर झागड़ाएँ अंत हेइक आर एहे टाइ हांड़ि-कुड़ि ढांग ढुंग हे के खेइल हका

हेइक। मिनतुक घुरि दिन आरअ अहे उत्साहक संगे खेल उचरेइक। खेइल कर समइए कुदा-कुदि छुआ-छुइ, लुका-लुकि हेइक। खेलते खेलते गेजा हेइक। आर आखिर माहान काकउ एका करि कादाँ कराथिक तखन बड़े लगे गाइर देके सभे के खेदेथिन आर जे काँदए ताके रा बदल घुरा बेइक कहि सांतअना दे दुलार करि घार पाठथिक।

गित-1. इचिङ मिचिङ बेइल पात
बाड़िङ आछे निम गाछ
निम झइर-झइर करे
खाँखड़ा न कुचिआ...
2. जाहु जाहु करम राजा
दे माहतो चाउर भिंजा
3. एकाम, दुकाम, तिनेक लाकडुम
डाहिक डुमेइर तितांउ कारलांउ
हारू गाजु गया गाटा मेझलि
4. आठ काठ रबअ जड़ा
डाके रसिक किड़िर काड़िर घड़ा
5. इघअ इघअ पानि
बन राइजेक कउआ गागाए, ढाप-ढुप, चाप-चुप
6. रउद देंहि रे टेटेगाना
नेदि धाइरे केरिआ कुकुर भागाए देबँ
बामला डहर देखाए देबँ।
7. आलिम डालिम चेपटि माला
माइर के माइर काके भाइर
बाबु के माइर
8. छुटु मुटु टुंगरि
सुधाइ पकल कुंदरि
दे न दादा ठेंगा काटि
बहु जातउ बागालि
9. केहनी रे माइ केहनि
केहनी क भाइ सात बेहनि

धान देलेइ कांड़ि के
कांड़िञ देलाक चाउर
चाउर देलेञ मालिन के
मालिने देलाक फुल
फुल देलेञ...

छउआ भुला गित

छउआ के छुटु खन ले दुलार आदर करि नाना रकम कर भेरकेटि करि भुलाथिन। जखन खेलत तखनअ आर जखन कांदत तखनअ। छउआ तखन अबला सिसु रहतला काथा कहे नि पारत। मिनतुक माँएक, मसिक, काकी, जेठिक, सुर लगाए गाउअत से गित गिला अनात आर मन लागाए सुनत। एहे निआर छउआ जखन कांदत तखन चुप करेक जालाएँ भंठथिन।

गित- **1.** मर छउआ ना कांदाए
दिहा गअ
आम पातेक ढलकि बाजाए
दिहा गअ मर छउआ...
2. आउ! आउ! चाँदअ माएँ।
बाबु के दुध भात आनि देंहि
बाबुञ खाताक टुपुस के
3. आट बाँधअ, पाट बाँधअ, दतुन बाँधअ
बाबु के बाधेञ राटा पाटा
बाबु बाढ़े एरिल बाँस केरिल कुङ फाङ फुङ ससटि
माए के नमअ करे
चरइआ गिरे भदास। बाबुञ खाताक
करजि करजि माँए खाताक चिचि
आर बापे खाताक....
4. गुगुचु पांडुचु पांइख डले
एतिक राइते काहार छाइला काँदे

डॉ. वृंदावन महतो



जन्म : 17 जनवरी 1958
गाँव : बादला (तमाड़),
जिला : राँची (झारखंड)
पिता : स्व. खेत्र महतो
माता : श्रीमती लीलो देवी

कुड़मालि भाषा-साहित्य में डॉ. वृंदावन महतो एक सुपरिचित नाम है। कुड़मालि भाषा-साहित्य, समाज और संस्कृति के विकास के लिए आप पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से एक लोकप्रिय लेखक, गायक और कलाकार के रूप में लगातार सक्रिय हैं। अपने लेखों तथा सृजनात्मक गद्य साहित्य के लेखन से आपने कुड़मालि शिष्ट साहित्य को समृद्ध तो किया ही है, उसे एक वैचारिक आवेग भी प्रदान किया है। कुड़मालि भाषा-साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए झारखंड स्वायत्त परिषद् द्वारा 1995 में आप सम्मानित हो चुके हैं। कुड़मालि भाषा के उत्थान के लिए सी. आई. आई. एल., मैसूर एवं न्यू लिंग्विस्टीक सर्वे ऑफ इंडिया, भारत सरकार से जुड़कर आपने महत्वपूर्ण कार्य किया है तथा स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अब तक आपकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।

संप्रति आप मारवाड़ी कॉलेज, राँची में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में कुड़मालि के प्राध्यापक हैं और झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा व आदिवासी कुड़मी समाज से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

संपर्क : सामलौंग, लखानी इनक्लेव के पास
नामकोम, राँची - 8340010 (झारखंड)
दूरभाष : 9430345977, 0651-2462789

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड